एक मसीही कौन है ?

लेखक
सनी डेविड

सत्य-सुसमाचार रेडिया संदेशमाला

प्रकाशक:

मसीह की कलीसिया
पोस्ट बॉक्स 3815
नई दिल्ली 110049

WHO IS A CHRISTIAN ?

by Sunny David

मुद्रक: प्रिंट इण्डिया, A-38/2 द्वितीय चरण, मायापुरी,
नई दिल्ली - 110064

भूमिका

इन प्रवचनों को मैंने सत्य - सुसमाचार के द्वारा रेडियो प्रसारण के लिये लिखा था। और अब, बिना किसी प्रकार के परिवर्तन के इन प्रवचनों को ज्यों का त्यों एक पुस्तक का रुप दिया गया है। मेरी आशा है कि पाठक इन प्रवचनों को पढ़कर इस बात से भली-भांति परिचित हो सकेंगे कि वास्तव में एक मसीही कौन है। इस विषय में हमारे अनेकों देशवासियों के मनों में कुछ गलत धारणाएं है - जैसे कि कुछ लोग समझते हैं, कि मसीही धर्म केवल विदेशी या गोरे लोगों का ही धर्म है। कुछ का विचार है, कि केवल छोटी जातियों के लोग ही मसीही (ईसाई) बनते हैं। कुछ लोग ऐसा भी सोचते हैं कि मसीही केवल वही लोग बनते हैं जिन्हें किसी प्रकार का कोई आर्थिक लाभ प्राप्त होता है, इत्यादि।

किन्तु, वास्तव में, एक मसीही कौन है ? प्रस्तुत पुस्तक में इसी एक प्रश्न के कई उत्तर दिये गए हैं।

सनी डेविड

विषय सूची

1.	मसीही क्यों बनें?	6
2.	जो आत्मा के अनुसार चलता है	12
3.	जो विश्वास से चलता है	17
4.	जो मर चुका है	22
5.	जो कभी नहीं मरेगा	27
6.	जिसने मसीह को पहन लिया है	33
7.	जो अपना भविष्य जानता है	38
8.	जो पीछे मुड़कर नहीं देखता	43
9.	जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है	48
10.	जो परमेश्वर की आज्ञा मानता है	54
11.	जिसका नया जन्म हुआ है	60
12.	जिसके पास अनन्त जीवन है	65

मसीही क्यों बनें?

इस कार्यक्रम में हम अपना ध्यान उस महान व्यक्ति के जीवन के ऊपर केंद्रित करते हैं जो पृथ्वी के दृष्टिकोण से तो एक नबी और एक महान् शिक्षक था, परंतु जो स्वर्ग के दृष्टिकोण से जगत का उद्धारकर्त्ता था। वह व्यक्ति जिसे मनुष्यों ने तुच्छ समझकर क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला था, परंतु परमेश्वर ने उसकी मृत्यु को जगत के पापों का प्रायश्चित घोषित किया था। और यद्यपि उस ने पृथ्वी पर आकर अपने आप को ऐसा नम्र किया था कि एक दास का सा जीवन व्यतीत किया, और परमेश्वर के स्वरुप में होते हुए भी परमेश्वर के समान होने को अपने अधिकार में रखने की वस्तु न समझा, और अपने आप को उसने "मनुष्य का पुत्र" कहकर संबोधित किया। परंतु वास्तव में वह परमेश्वर का पुत्र था। उसका नाम यीशु मसीह था, अर्थात् परमेश्वर द्वारा अभिषिक्त, जगत का उद्धारकर्त्ता!

जब हम यीशु मसीह के जीवन के ऊपर विचार करते हैं; जब हम उसके बारें में बाइबल में से पढ़ते हैं, तो यह सच्चाई शीशे की तरह साफ होकर हमारे सामने आ जाती है कि उसका सा इंसान पृथ्वी पर और कोई दूसरा कभी नहीं हुआ। केवल वही एक ऐसा मनुष्य था जिस ने कभी कोई पाप नहीं किया। उसने ऐसी अद्भुत शिक्षाएं दी और ऐसे-ऐसे महान् काम किए जिन्हें केवल परमेश्वर ही कर सकता है। और न केवल वह मरा, परंतु केवल वही एक ऐसा इंसान था जिसने यह दावा भी किया था, कि मैं अपनी मौत के बाद फिर जी उठूंगा। और हकीकत में वह जी उठा था! और उसके बाद वह फिर कभी नहीं मरा, पर लोगों के देखते-देखते वह स्वर्ग पर उठा लिया गया था।

जब यीशु इस पृथ्वी पर था तो उसने लोगों से कहा था, कि वास्तव में मार्ग, सच्चाई और जिन्दगी मैं ही हूं, और यदि कोई परमेश्वर के पास पहुंचना चाहता है तो वह मेरे जीवन का अनुसरण करे और मेरा अनुयायी बने, क्योंकि बिना मेरे द्वारा कोई परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकता। (यूहन्ना १४:६)। इसलिये सच्चाई यह है, मित्रो, कि यदि आप परमेश्वर के स्वर्ग में उसके पास पहुंचना चाहते हैं, तो जरुरी है कि आप उसका कहना मानें और उसके अनुयायी बनें। क्योंकि केवल उसी ने अपने आप को बलिदान करके हम सब के पापों का कर्ज़ा अपने खून से चुकाया है। उसने अपने आप को इसलिये बलिदान किया था ताकि हम सब के पापों का प्रायश्चित उसके पवित्र जीवन के बलिदान के द्वारा हो जाए। वह हमारे पापों का प्रायश्चित है।

पवित्र बाइबल हमें यह सिखाती है, कि यदि हम अपने सारे मन से यीशु मसीह में यह विश्वास लाएंगे कि वह परमेश्वर का पुत्र है और हमारे पापों के बदले में वह क्रूस पर मरा था। और यदि हम अपने सब पापों से मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेंगे, तो यीशु मसीह के बलिदान के कारण परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करके हमारा उद्धार करेगा। (मत्ती २८:१९,२०; मरकुस १६:१५, १६; प्रेरितों २:३८,४७)। और फिर इसके बाद यदि हम प्रतिदिन यीशु की आज्ञाओं पर चलकर उस में बने रहेंगे, तो वह हमें पाप से बचाए रखेगा। (१ यूहन्ना १:७-९)। और यदि हम अपने सारे जीवन के अंत तक भी उसके प्रति विश्वासी बने रहेंगे तो अन्त में वह हमें जीवन का मुकुट अर्थात् स्वर्ग में अनन्त जीवन देगा। (प्रकाशितवाक्य २:१०)।

प्रभु यीशु ने एक जगह कहा था, कि नाशमान भोजन के लिए परिश्रम न करो परंतु उस भोजन को प्राप्त करने के लिये परिश्रम करो जो अनन्त जीवन तक ठहरता है। (यूहन्ना ६:२७)। और फिर यीशु ने कहा था, कि "जो कोई मेरे पीछे आना चाहे वह अपने आपे से इंकार करे और अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, परंतु जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिए अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा।" और, "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की

हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा ? और मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा ?" (मरकुस:८:३४-३७)।

मित्रो, यीशु मसीह के पीछे आना या मसीह का अनुयायी बनना प्रत्येक मनुष्य के लिये जबकि आवश्यक है, परंतु यह एक बहुत ही बड़ा व्यक्तिगत निश्चय है। कोई भी मनुष्य अपने जन्म से एक मसीही या मसीह का अनुयायी बनकर पैदा नहीं होता है। यह एक गलत धारणा है, जो कि कुछ लोगों के मनों में है। वे कहते हैं, कि मैं तो जन्म से ही एक मसीही हूं। यह बात असंभव है। क्योंकि प्रभु यीशु ने कहा था, कि जब तक कोई मनुष्य नए सिरे से, जल और आत्मा से, न जन्में तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। (यूहन्ना ३:३,५)। मसीह का अनुयायी बनने का अर्थ है, मसीह के पीछे चलने लगना। और मसीह के पीछे हो लेने से पहिले आवश्यक है कि मनुष्य अपने आपे से इंकार करे, और अपना क्रूस उठाए, और फिर उसके पीछे हो ले। आज मसीही नाम से कहलानेवाले लोग तो संसार में बहुतेरे हैं, परंतु वास्तव में ऐसे लोग पृथ्वी पर बहुत ही थोड़े हैं जो अपने आपे से इंकार करके और अपना क्रूस उठाकर उसके पीछे चल रहे हैं। आज बहुतेरे लोग मसीह के पीछे उद्धार प्राप्त करने के लिये या स्वर्ग में अनन्त जीवन पाने के लिये नहीं, परंतु अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिये आना चाहते हैं। हमारे देश में ऐसे लोगों की कोई कमी नहीं है जो मसीह के पास आने को तैयार हैं। परंतु उसके पास आने का उनका दृष्टिकोण बिल्कुल भिन्न है। वे अपने आपे से इंकार करने को तैयार नहीं है। वे अपना क्रूस उठाने को तैयार नहीं हैं, परंतु वे उसके पास आना चाहते हैं। क्यों ? क्योंकि उनके पास कोई काम नहीं हैं ; वे निर्धन हैं या उन्हें किसी प्रकार की सांसारिक समस्या से छुटकारा पाना है। बहुतेरे ऐसा सोचते हैं, कि यदि वे एक मसीही बन जाएंगे तो उन्हें नौकरी मिल जाएगी या उन्हें पैसा मिल जाएगा या उनके घर की कोई समस्या हल हो जाएगी। मेरे पास बहुत से ऐसे लोगों के पत्र आते हैं, जो सत्य-सुसमाचार में मसीह के बारे में सुनकर उसके अनुयायी बनना चाहते हैं। परंतु उनकी कुछ शर्तें हैं! वे कहते हैं, कि पहले आप हमें यह बताईए कि मसीही बनने पर हमें क्या मिलेगा ? क्या आप हमारा कोई काम लगवाएंगे ? क्या आप आर्थिक रुप से हमारी सहायता

करेंगे ? क्या आप हमें रहने की जगह देंगे ? ऐसे लोग वास्तव में उस मनुष्य की तरह हैं, जिसने एक बार यीशु से कहा था, कि मैं तेरे पीछे हो लेना चाहता हूं। परंतु वास्तव में उसके मन में यह बात थी कि यदि वह यीशु के पीछे हो लेगा तो उसकी सारी समस्याएं हल हो जाएंगी और उसका जीवन ऐश-ओ-आराम से व्यतीत होगा। जानते हैं आप कि यीशु ने उस से क्या कहा था ? प्रभु ने उस से कहा था, कि चिड़ियों के रहने के अपने घोंसले होते हैं, और लोमड़ियों के पास भी रहने को भट होते हैं, परंतु मेरे पास तो सिर धरने तक की भी जगह नहीं है! (लूका ६:५८)। और, एक बार जब कुछ लोग उसके पास केवल इसलिए आए थे कि वह उन्हें रोटियां खिलाकर उनका पेट भरे, तो यीशु ने उन से कहा था, कि नाशमान भोजन के लिए परिश्रम मत करो परंतु उस भोजन को प्राप्त करने का यत्न करो जो अनन्त जीवन देता है। (यूहन्ना ६:२७).

मित्रो, मसीही जीवन यद्यपि एक बड़ा ही आशीष भरा जीवन है, क्योंकि इस जीवन में हम उस मसीह के पवित्र जीवन का अनुसरण करते हैं जिसके पीछे चलने से हमें स्वर्ग में प्रवेश करने की आशा मिलती है। परंतु यह एक ऐसा जीवन है जो सांसारिक दृष्टिकोण से बड़ा ही कठिन है। मैं जानता हूं, कि आज बहुत से प्रचारक यह कहकर लोगों को बहका रहे हैं, कि यदि वे मसीह के पीछे आएंगे तो उनकी बीमारियां दूर हो जाएंगी और उनकी सारी समस्याएं हल हो जाएंगी। परंतु यह बात सच्चाई से बहुत परे है। सच्चाई वास्तव में यह है, कि मसीह के पीछे चलने का निश्चय करना एक सकरे तथा कठिन मार्ग पर चलने का इरादा करना है। मसीह ने कहा था, कि जो कोई मेरे पीछे आना चाहे तो वह अपने आप से इंकार करे। अर्थात् इस बात का निश्चय करे कि अब भविष्य में अपने लिये नहीं जिएगा; वह अपनी इच्छा पर नहीं चलेगा; और उसका अपने ऊपर कोई अधिकार नहीं रहेगा। परंतु इसके विपरीत, अब से वह मसीह के लिए जिएगा, और उसकी इच्छा पर चलेगा, और उसके सम्पूर्ण जीवन पर केवल मसीह का ही अधिकार होगा। और फिर, मसीह ने कहा था, कि जो कोई मेरे पीछे आना चाहे वह अपने आपे से इंकार करके और अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे हो ले। क्रूस वह वस्तु है जिस पर मसीह का निरादर

हुआ था: क्रूस पर चढ़कर उसने सारी मानवता के लिये दुख उठाया था, और क्रूस पर अपने प्राणों को पापियों के लिये बलिदान करके मसीह ने परमेश्वर की इच्छा को पूरा किया था। और उसने कहा था, कि यदि कोई मेरे पीछे आना चाहता है तो वह अपना क्रूस उठाए, और फिर मेरे पीछे हो ले।

क्या आप एक मसीही हैं ? क्या आप मसीह के पास आना चाहते हैं ? क्या आप मसीह के एक अनुयायी बनना चाहते हैं ? कोई भी मनुष्य इससे बड़ा और कोई दूसरा निश्चय नहीं कर सकता। क्योंकि मसीह के पास आकर उसके अनुयायी बनने का अर्थ है अपने सब पापों से छुटकारा प्राप्त करना, और इस वर्तमान जीवन के बाद स्वर्ग में प्रवेश करके अनन्त जीवन पाने की आशा रखना। परंतु, क्या आप अपने आप का इंकार करने को तैयार हैं ? क्या आप अपना क्रूस उठाकर मसीह के पीछे चलने को तैयार हैं ? क्या आप अपना क्रूस उठाकर मसीह के पीछे चलने को तैयार हैं ? मसीही जीवन एक चुनौतीपूर्ण जीवन है। एक बार एक बड़े ही धनी व्यक्ति ने यीशु के पास आकर उस से पूछा था, कि स्वर्ग में अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिये मैं क्या करूं ? यीशु ने उस से कहा था, कि तू अपना सब कुछ बेचकर मेरे पीछे हो ले और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा। वह मनुष्य यीशु की बात सुनकर उदास हुआ था, क्योंकि वह अनन्त जीवन प्राप्त करने का दाम चुकाने को तैयार नही था।

मित्रो, यदि हम यीशु के बलिदान के कारण अपने पापों से उद्धार प्राप्त करके स्वर्ग में अनन्त जीवन प्राप्त करना चाहते हैं, तो यीशु कहता है, कि उस के लिये हमें एक दाम चुकाना है-और वह दाम है, अपने आपे से इंकार करना, और अपना क्रूस उठाकर मसीह के पीछे चलना। हमें चाहिए कि हम अपने मनों से इस बात को निकाल दें कि मसीह के अनुयायी बनने के द्वारा हमें कोई आर्थिक लाभ मिल सकता है, या हमारी समस्याओं का हल हो सकता है। परंतु इसके विपरीत, सच्चाई यह है, कि यदि हम वास्तव में मसीह के अनुयायी बनेंगे तो हम यीशु मसीह की तरह ही एक त्याग और बलिदान का जवीन व्यतीत करने का प्रयत्न करेंगे। और उसके सुसमाचार के प्रचार के लिये अपने धन में से देंगे। और उसके पीछे चलने के कारण यदि हमें समस्याओं और

दुखों का सामना भी करना पड़ेगा तौभी हम अपना क्रूस उठाकर उसके पीछे चलेंगे।

क्या आप उसमें विश्वास लाकर और उसकी आज्ञा मानकर उसके पीछे चलने को तैयार हैं ? वह आपका उद्धार कर सकता है। वह आपको स्वर्ग में अनन्त जीवन दे सकता है। परंतु यह निश्चय आपको स्वंय ही करना है।

एक मसीही बनने के लिये आपको चाहिए कि आप अपने सारे मन से यीशु में यह विश्वास लाएं कि उसने क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा आपके पापों का प्रायश्चित कर दिया है। फिर, आप सब प्रकार के पाप और अधर्म से अपना मन फिराएं, और फिर अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये जल के भीतर यीशु की आज्ञानुसार बपतिस्मा लें। ऐसा करने पर मसीह आप के सब पापों से आपका उद्धार करेगा, और आपको अपनी कलीसिया अर्थात उद्धार पाए हुए लोगों की मण्डली में मिलाएगा। और यदि आप उस में बने रहकर अपना सारा जीवन उसकी शिक्षाओं पर चलकर व्यतीत करेंगे, तो अन्त में वह आपको स्वर्ग में हमेशा की जिंदगी भी देगा। (प्रेरितों २:३८,४१, ४७; प्रकाशितवाक्य २:१०)।

जो आत्मा के अनुसार चलता है

मनुष्य की सबसे बड़ी समस्या पाप है। पृथ्वी पर जहां कहीं भी मनुष्य है वहां पाप भी विद्यमान् है। पाप के कारण मनुष्य परमेश्वर से अलग है, पाप मनुष्य को शारीरिक तथा आत्मिक दोनों तरह से नाश करता है, और मनुष्य इस बात से परिचित भी है लेकिन वह फिर भी पाप करता है। मैं ऐसे बहुत से लोगों को जानता हूं जो यह स्वीकार करते हैं कि वे एक गलत मार्ग पर चल रहे हैं, लेकिन फिर भी वे उसे छोड़ने को तैयार नहीं हैं। सिगरेट के प्रत्येक पैकेट पर लिखा है, कि सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है, लेकिन फिर भी बहुत लोग सिगरेट पीते हैं। लोग जानते हैं कि शराब पीने से लोगों के घर उजड़ते हैं, लोगों की जानें जाती हैं, लेकिन फिर भी लाखों रुपये की शराब हर एक दिन बिकती है। फिर, बाइबल से इस बात का प्रति दिन प्रचार किया जाता है कि पाप के कारण मनुष्य परमेश्वर से अलग है, आत्मिक रुप से मरा हुआ है, और पाप मनुष्य को नरक की दिशा की ओर ले जा रहा है। लेकिन फिर भी मनुष्य पाप करता है। और प्रतिदिन करता है। पाप से अपना मन फिराने के विपरीतः पाप को छोड़कर परमेश्वर के पास आने के विपरीत, मनुष्य दान-पुन के काम करके और अपने मन की रीति से परमेश्वर की आराधना करके, अपने पापों के ऊपर पर्दा डालना चाहता है। भले काम करके मनुष्य अपने पापों का प्रायश्चित करना चाहता हैः परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहता है। परंतु, सुनिए, कि हमारा परमेश्वर अपने भक्त यशायाह के द्वारा अपनी बाइबल में हमसे क्या कहता है।

वह कहता है, "कि बैल तो अपने मालिक को और गदहा अपने स्वामी की चरनी को पहिचानता है परंतु मेरे लोग मुझे नहीं जानते। और फिर वह

कहता है, हाय यह जाति पाप से कैसी भरी है। यह समाज अधर्म से कैसा लदा हुआ है। इस वंश के लोग कैसे कुकर्मी हैं, ये लड़केबाले कैसे बिगड़ गए हैं। उन्होनें उस पवित्र को तुच्छ जाना है। वे पराए बनकर दूर हो गए है।" और फिर वह कहता है, कि, "जब तुम मेरी ओर हाथ फैलाओ, तब मैं तुम से मुख फेर लूंगा; तुम कितनी ही प्रार्थना क्यों न करो, तौभी मैं तुम्हारी न सुनुंगा, क्योंकि तुम्हारे हाथ खून से भरे हैं। इसलिये अपने को धोकर पवित्र करो; मेरी आंखों के सामने से अपने बुरे कामों को दूर करो; भविष्य में बुराई करना छोड़ दो। भलाई करना सीखो। परमेश्वर कहता है, कि आओ, हम आपस में वाद-विवाद करें : तुम्हारे पाप चाहे लाल रंग के हों, तौभी वे हिम की नाईं उजले हो जाएंगे; और चाहे अर्गवानी रंग के हों, तौभी वे ऊन के समान सफेद हो जाएंगे। यदि तुम आज्ञाकारी होकर मेरी मानो।" (यशायाह १)।

सो हम देखते हैं, कि जबकि एक ओर तो पाप और पाप के कारण अनन्त मृत्यु है, परंतु दूसरी ओर परमेश्वर का अनुग्रह है और उसके द्वारा अनन्त जीवन है। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि, "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परंतु परमेश्वर का बरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।" (रोमियों ६:२३)। सो पृथ्वी पर आज प्रत्येक मनुष्य के सामने एक बहुत बड़ी चुनौती है ; और एक बहुत बड़ा प्रश्न है। हर एक इंसान को इस बात का निश्चय करना है, कि क्या वह पाप की मजदूरी को चुनेगा या परमेश्वर के बरदान को ? हम इन दोनों चीज़ों को एक साथ हासिल नहीं कर सकते। परमेश्वर का वचन कहता है, कि जो मनुष्य अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; पर जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा। (गलतियों ६:८)। चाहे हम इस बात को स्वीकार करें या न करें, परंतु परमेश्वर का वचन हमें बड़ी ही स्पष्टता से यह बताता है कि उसने सब मनुष्यों कें लिये न्याय का एक दिन निश्चित किया है। और उसके वचन की पुस्तक में हमें यह चेतावनी मिलती है कि, "धोखा न खाओ" क्योंकि, "परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा"। (गलतियों ६:७)।

क्या आप जानते हैं कि मनुष्य पाप क्यों करता है ? परमेश्वर की पुस्तक कहती, कि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं यानि परमेश्वर की इच्छा से नहीं है, परंतु संसार ही की ओर से है। परंतु संसार ओर उसकी अभिलाषाएं मिट जाएंगे, पर जो मनुष्य परमेश्वर की इच्छा से चलता है वह हमेशा बना रहेगा। (१यूहन्ना २:१६,१७)। यदि पृथ्वी पर कोई भी ऐसी वस्तु है जिससे मनुष्य को सबसे अधिक खबरदार रहना चाहिए और बचना चाहिए, तो वह वस्तु है अभिलाषा। जब परमेश्वर ने सबसे पहले मनुष्य को बनाकर एक सुंदर स्थान पर रखा था, तो मनुष्य में उस समय कोई पाप नहीं था। वह उस वक्त एक नए जन्में हुए बालक की नाईं निष्पाप था। परंतु कुछ समय पश्चात परमेश्वर ने मनुष्य को अपने से अलग कर दिया था, क्योंकि मनुष्य ने परमेश्वर की आज्ञा के विरुद्ध काम करके पाप किया था। परंतु क्या आप जानते हैं, कि उस पहिले इंसान ने पाप क्यों किया था ? क्योंकि वह अपनी अभिलाषा पर काबू न पा सका था। और ठीक यही बात आज भी प्रत्येक पाप के साथ जुड़ी हुई है। पवित्र बाइबल में हम यूं पढ़ते हैं, कि, "प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर और फंसकर परीक्षा में पड़ता हैं।" और, "फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है, और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है।" (याकूब १:१४,१५)। सो प्रत्येक मनुष्य स्वंय अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर या आकर्षित होकर पाप करता है, और वही पाप उसकी मृत्यु का कारण बन जाता है। जिस प्रकार से एक चूहा उस रोटी की तरफ आकर्षित होता है जिसे चूहेदान में लगाया जाता है। वह उसे देखकर उस की अभिलाषा करता है और कुछ ही क्षणों में उसकी अभिलाषा उसे मौत में मुंह में ढकेल देती है! ठीक ऐसे ही प्रत्येक मनुष्य अपनी अभिलाषा से खिंचकर और फंसकर पाप करता है और वह पाप उसकी मृत्यु का कारण बन जाता है।

सो हम क्या देखते हैं? हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं, कि बाइबल हमें यह सिखाती है, कि हम अपने शरीर की अभिलाषाओं या लालसाओं को पूरा करने के कारण पाप में हैं। और पाप की दशा में रहने के कारण हम पवित्र

परमेश्वर से अलग हैं। और इसलिये स्वंय अपने ही पापों में मरे हुए हैं। और यदि आज ही हमारे प्राण निकल जाएं तो हम हमेशा के लिये उस अनन्तकाल में चले जाएंगे जहां से कभी कोई वापस नहीं आता और वहां हम सदा अपने पाप के कारण परमेश्वर से दूर और अलग रहेंगे। और यही वह स्थान है जिसे हम नरक कहकर पुकारते हैं। परंतु परमेश्वर का बरदान मसीह यीशु में अनन्त जीवन है। अर्थात्, यदि हम यीशु के पास आ जाएं; यदि हम उसे अपना लें, और यदि हम उसके भीतर हो जाएं, तो हम अनन्त मृत्यु से छूटकर अनन्त जीवन पाएंगे। क्योंकि यीशु परमेश्वर की ओर से हमारे पापों का प्रायश्चित है। उसे परमेश्वर ने हमारे सब पापों के कारण बलिदान कर दिया है, ताकि हम उस में होकर परमेश्वर के निकट धर्मी बन जाएं। इसीलिये बाइबल में यीशु मसीह को परमेश्वर का वह बरदान कहा गया है, जिस में हमें पापों से छुटकारा और अनन्त जीवन प्राप्त होता है। और यह तब होता है, जब हम अपना मन फिराकर अपने सब पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले लेते हैं, जैसे कि प्रभु यीशु ने हमें आज्ञा दी है। (मरकुस १६:१६; लूका १३:३)।

जब हम प्रभु यीशु मसीह में विश्वास ले आते हैं ओर उसकी आज्ञा मानकर अपने पापों से मन फिराकर बपतिस्मा ले लेते हैं, तो उसके द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हो जाता है। हम यीशु के द्वारा परमेश्वर की संगति में वापस आ जाते हैं। "सो अब जो मसीह यीशु में है," बाइबल कहती है, "उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं; क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन् आत्मा के अनुसार चलते है।" (रोमियों ८:१)। यानि जिन्हों ने हकीकत में मसीह यीशु को अपना लिया है, जो सचमुच में उसके अनुयायी बन गए है, वे अब अपने शरीर की लालसाओं के अनुसार नहीं चलते, परंतु अब वे आत्मा के अनुसार, अर्थात परमेश्वर के पवित्र आत्मा की अगुवाई में चलते हैं। वे परमेश्वर के वचन की पुस्तक में लिखी हुई उन शिक्षाओं के अनुसार चलते हैं जिन्हें उसके भक्तों ने उसके पवित्र आत्मा द्वारा उभारे जाकर लिखा था। (२ पतरस १:२१)। और उसका वचन शिक्षा देकर यह कहता है कि, "आत्मा के अनुसार चलो तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे। क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में, और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करता है,

और ये एक दूसरे के विरोधी हैं; इसलिये कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ क्योंकि शरीर के काम तो प्रकट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा"। परंतु, "ऐसे-ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।" पर दूसरी ओर, जो लोग परमेश्वर के पवित्र आत्मा की शिक्षा के अनुसार चलते हैं उनके फल हैं, "प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम।" क्योंकि अब वे "मसीह यीशु के हैं", और, "उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है।" (गलतियों ५:१६-२४)।

सो कितना अद्‌भुत जीवन है यह, जिसे परमेश्वर हमें यीशु मसीह में देना चाहता है। क्या आपने उसके बरदान को स्वीकार कर लिया है ? जब तक आप मसीह में नहीं हैं आप अपने शरीर की अभिलाषाओं के अनुसार चलते रहेंगे। परंतु यीशु मसीह के भीतर आकर आप एक नए इंसान बन जाएंगे। क्योंकि जो मनुष्य यीशु मसीह में आ जाता है वह फिर अपने शरीर के अनुसार नहीं चलता परंतु परमेश्वर के पवित्र आत्मा के अनुसार चलता है। यही कारण है, कि हम सब को प्रभु यीशु मसीह के पास आना चाहिए और उसमें विश्वास लाकर उसकी आज्ञाओं को मानना चाहिए। क्योंकि उसमें हमें एक नया जीवन मिलता है।

जो विश्वास से चलता है

विश्वास एक ऐसी वस्तु है जिसका प्रत्येक मनुष्य के जीवन में एक बहुत बड़ा महत्व है। विश्वास के बिना मनुष्य का जीवन असंभव है। हम प्रत्येक दिन विश्वास से ही जीवित रहते हैं। हम जिन्दा रहने के लिये जो कुछ भी खाते और पीते हैं वह सब हम विश्वास से ही खाते - पीते हैं। हम नहीं जानते कि वे वस्तुएं जिन्हें हम खाते - पीते हैं किस प्रकार हमारे शरीर के भीतर जाकर हमें जीवित रहने के लिये शक्ति देती हैं, परंतु हमें विश्वास है कि वे सब वस्तुएं हमारे शरीर के लिये उपयोगी हैं। ऐसे ही, जब हम बीमार पड़ते हैं तो हम डॉक्टर के पास जाते हैं। क्यों ? क्योंकि हमारा विश्वास होता है कि डॉक्टर की दवा से या ईलाज से हम ठीक हो जाएंगे। फिर हम दवाई लेते हैं। अब हम इस बात को नहीं समझ सकते कि वह पुड़िया या वह गोली या पीने की कड़वी दवाई जो हमें डॉक्टर देता है वह किस तरह हमारे शरीर में प्रवेश करके हमें चंगा कर देती है। परंतु तौभी हम विश्वास से उस दवाई को ले लेते हैं और हम चंगे हो जाते हैं। फिर हम लोगों को सफर करते देखते हैं। हम खुद भी सफर करते हैं। आज हम अपने पूर्वजों की तरह मीलों पैदल चलकर नहीं जाते। परंतु यदि हमें कहीं जाना होता है तो हम मोटर या बस से या रेलगाड़ी या हवाई जहाज से कुछ ही घण्टों में अपनी मंजिल पर पहुंच जाते हैं। अब क्या आपने कभी इस बात को अनुभव किया है कि यह काम करने के लिये कितने अधिक विश्वास की आवश्यकता होती है ? हम अपनी प्रत्येक यात्रा को विश्वास के साथ करते हैं। यद्यपि हम इस बात को नहीं जानते कि वह मशीन किस तरह से उड़कर या दौड़कर तेजी के साथ हमें एक स्थान से दूसरे स्थान

पर पहुंचा देती है। परंतु बिना कोई प्रश्न किये, विश्वास के साथ, हम उसमें बैठ जाते हैं और अपने ठिकाने पर पहुंच जाते हैं। अब, आज हम बिजली के युग में रहते हैं। आज लगभग सभी वस्तुओं को बिजली से चलाने का प्रयत्न किया जा रहा है। हम एक कमरे में घुसते हैं और एक दम हमारा हाथ एक बटन पर जाता है और बटन को दबाते ही पूरे कमरे में रौशनी हो जाती है। फिर हम एक दूसरा बटन दबाते हैं तो रेडियो से आवाज़ आने लगती है। और कुछ ही क्षणों में एक तीसरा बटन घुमाने से टी.वी. पर पिक्चर आने लगती है। अब, यह सब किस प्रकार से होता है, हम इस बात से परिचित नहीं हैं। परंतु इन सब बातों को हम विश्वास से स्वीकार करते हैं। सो हम देखते हैं कि हम सब के जीवनों में विश्वास का एक बहुत बड़ा स्थान है।

परंतु तौभी हमारा विश्वास अकारण नहीं है। पर हमारा विश्वास कुछ विशेष कारणों पर आधारित है। उदाहरण के रुप से, हम कुछ भी उठाकर नहीं खा-पी लेते, परंतु हम केवल उन्हीं वस्तुओं को खाते-पीते हैं जिनके बारें में यह प्रमाणित हो चुका है कि वे वस्तुएं मनुष्य के शरीर के लिये लाभदायक हैं। यही बात दवाई के बारे में भी है, हम केवल वही दवाई लेते हैं जिसके विषय में यह प्रमाणित हो चुका है कि वह उस रोग के लिये लाभदायक है। हम किसी भी दवाई का डिब्बा या बोतल खोलकर उसमें से दवाई नहीं खा लेते हैं। परंतु, मान लीजिए, कोई आदमी दिल्ली से देहरादून जाना चाहता है, और वह किसी पेड़ के ऊपर चढ़कर बैठ जाए, और कहे कि मुझे पूरा विश्वास है कि मैं इस पेड़ पर बैठकर देहरादून पहुंच जाऊंगा। अब ऐसा विश्वास किस तरह का विश्वास होगा ? क्या उस व्यक्ति का ऐसा विश्वास उसे देहरादून पहुंचा देगा ? कदापि नहीं। उसका विश्वास अकारण है; बिना किसी आधार के है। इस प्रकार का विश्वास अंध-विश्वास है। परंतु यदि वही मनुष्य देहरादून जानेवाली किसी बस या रेलगाड़ी में बैठ जाए और कहे कि मुझे विश्वास है कि मैं देहरादून पहुंच जाऊंगा। तो उसका विश्वास बिल्कुल सत्य है और ठीक है। यहां उसके विश्वास का एक उचित कारण है, यहां उसका विश्वास निराधार नहीं है।

परंतु विश्वास का महत्व न केवल सांसारिक बातों तक ही सीमित हैं, पर विश्वास का आत्मिक बातों में भी एक बहुत बड़ा स्थान है। अक्सर कुछ लोग कहते हैं, कि हम परमेश्वर में क्यों विश्वास करें, हमने उसे नहीं देखा है, सो हम क्यों उसमें विश्वास करें ? परंतु पवित्र बाइबल घोषित करती है, कि, "आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकाश-मण्डल उसकी हस्तकला को प्रकट कर रहा है।" (भजन संहिता १९:१)। परमेश्वर के होने का प्रमाण हमें सृष्टि की प्रत्येक वस्तु में और स्वंय अपने आप में भी मिलता है। परमेश्वर में हमारा विश्वास अकारण नहीं है; निराधार नहीं है, परंतु कुछ विशेष कारणों पर आधारित है। जब हम किसी चित्र को देखते हैं, तो हमारा ध्यान उसके बनानेवाले के ऊपर जाता है। जब हम किसी सुंदर घर को देखते हैं, तो हमारा ध्यान उसके बनानेवाले पर जाता है। और जब हम किसी शक्तिशाली मशीन को देखते हैं, तो हमारा ध्यान उस मशीन के बनानेवाले के ऊपर जाता है। यद्यपि हमने उन लोगों को नहीं देखा है जिन्होंने उन वस्तुओं को बनाया है, लेकिन फिर भी हम में से कोई यह नहीं कहेगा कि उस आकर्षित चित्र और सुंदर घर और शक्तिशाली मशीन का कोई बनानेवाला नहीं है। इसी प्रकार आकाश में और पृथ्वी पर प्रत्येक वस्तु हमारा ध्यान परमेश्वर पर दिलाती है।

लेकिन मान लें, थोड़ी देर के लिये, कि कोई आदमी मिट्टी सानकर एक पुतला बना लेता है, या लकड़ी या पत्थर काट-पीटकर उसकी कोई शक्ल बना लेता है। और कहता है, कि यह वह वस्तु है जिसने आकाश और पृथ्वी पर की सब वस्तुओं को बनाया है; यह वह वस्तु है जिसके द्वारा हमें जीवन और सब कुछ प्राप्त होता है। ऐसे व्यक्ति के लिये आप क्या कहेंगे ? क्या ऐसा जन उस मनुष्य से भिन्न है जो पेड़ के ऊपर बैठकर दिल्ली से देहरादून जाने की कल्पना करता है ? उसे विश्वास तो है, परंतु उसका विश्वास झूठा है, अकारण और निराधार है। क्योंकि जब कि एक चित्र और घर और मशीन को बनाने के लिये एक जीते-जागते शक्तिशाली दिमागवाले मनुष्य की आवश्यकता होती है, तो वह और भी कितना महान् और सर्वशक्तिमान होगा जिसने मनुष्य

को और सारी सृष्टि को बनाया है! सो, सच्चे वा जीवते परमेश्वर में हमारा विश्वास अकारण या निराधार नहीं है। परंतु परमेश्वर में हमारा विश्वास कुछ ठोस कारणों पर आधारित है।

लेकिन हम मसीह यीशु में क्यूं विश्वास करते हैं, कि वह परमेश्वर का पुत्र है और जगत का उद्धारकर्त्ता है ? जब हम किसी पर विश्वास करते हैं, तो हम इसलिये विश्वास करते हैं, कि या तो हमने स्वंय उसे देखा है, या फिर हमने उसके बारें में सुना है। अब हम में से किसी ने भी यीशु को अपनी आंखों से नहीं देखा है, लेकिन हम ने उसके बारे में पढ़ा है और सुना है। अब यदि हम उन लोगों की साक्षी पर विश्वास नहीं करेंगे जिन्होंने उसे देखा था और उसके अद्‌भुत कामों को देखा था, तो फिर ऐसी बहुत सी बातें हैं जिन्हें हम स्वीकार नहीं कर सकते। उदाहरण के रुप में, ऐसे बहुत से राजा या बादशाह हुए हैं जो सैकड़ों वर्ष पूर्व इस पृथ्वी पर थे, और उन्होंने बहुत से स्मारकों को भी बनवाया था। अब न तो हमने उन बादशाहों को देखा है, और हम में से बहुतेरों ने उनके बनवाए स्मारकों को भी नहीं देखा है। लेकिन फिर भी हम यह विश्वास करते हैं कि वे हुए थे। क्योंकि हम उनके बारें में इतिहास में पढ़ते हैं, हम उन लोगों की साक्षियों पर विश्वास करते हैं जिन्होंने उनके बारे में लिखा था।

ठीक यही बात यीशु मसीह के संबंध में भी है। हम में से किसी ने भी उसे अपनी आंखों से नहीं देखा है। लेकिन जिन लोगों ने उसे देखा था, और जो लोग उसके बड़े-बड़े आश्चर्यकर्मों को देखकर उस के चेले बन गए थे। उन्हीं लोगों ने उसके बारे में बाइबल के नए नियम में लिखा है। उसके अद्‌भुत जीवन और आश्चर्यपूर्ण कामों को देखकर उन्होंने इस बात का अंगीकार किया था कि "तू वास्तव में सच्चे वा जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।" उसी मसीह ने उन से कहा था, कि मैं क्रूस पर चढ़ाया जाऊंगा परंतु मैं तीन दिन बाद फिर जी उठूंगा। और जब वह वास्तव में मर गया और अपने कहे अनुसार फिर से जी उठा, तो उनके विश्वास की कोई सीमा नहीं रही। उन्होंने सब जगह जा-जाकर इस बात की गवाही दी, कि यीशु वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है;

वह मर गया था, और अब वह फिर जी उठा है, और हम उसके गवाह हैं। उन्हों ने सब लोगों को परमेश्वर के पुत्र का सुसमाचार सुनाया और कहा कि वह जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस पर मरा था और यदि वे अपने सारे मन से उसमें विश्वास लाएंगे और अपना मन फिराकर बपतिस्मा लेंगे तो यीशु के द्वारा वे अपने पापों से उद्धार पाएंगे। और हज़ारों लोगों ने उनकी गवाही पर विश्वास करके यीशु में विश्वास किया था और अपना मन फिराया था और उसमें बपतिस्मा लिया था। (मत्ती २८:१८-२० ; प्रेरितों २:३७-४७)।

और उन्हीं लोगों की गवाही आज हमारे पास बाइबल में मौजूद है। जब हम बाइबल में यीशु मसीह के बारे में पढ़ते हैं, तो हम उसके निष्पाप जीवन को देखते हैं, और उसके सामर्थपूर्ण कामों के बारे में पढ़ते हैं। हम पापियों के लिए उसके महान् बलिदान के विषय में पढ़ते हैं। और हम पढ़ते हैं, कि वह हमारा एक जिन्दा उद्धारकर्त्ता है, क्योंकि न सिर्फ वह मरा लेकिन वह फिर से जी भी उठा। इसीलिए हम उस में विश्वास करते हैं और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं। क्योंकि उसने अपने जीवन से और अपनी शिक्षाओं से और अपने कामों से और अपनी मृत्यु से और जी उठने से इस बात को सदा के लिये प्रमाणित कर दिया है कि केवल वही जगत का एकमात्र उद्धारकर्त्ता है।

पवित्र बाइबल में लिखा है, कि, "हम रुप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं"। (२ कुरिन्थियों ५:७)। परंतु मसीह में हमारा विश्वास अकारण तथा निराधार नहीं है। हम उसमें विश्वास करते हैं, क्योंकि उसने अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व से इस बात को हमेशा के लिये प्रमाणित कर दिया है कि केवल वही सच्चा मुक्तिदाता है। क्या आप उसमें विश्वास करते हैं ? मेरा आपसे यह आग्रह है, कि आप यीशु के व्यक्तित्व को किसी भी अन्य मनुष्य के व्यक्तित्व से मिलाकर देखें, और मेरा यह दावा है, कि यदि आप ऐसा करेंगे तो आप भी यह मान लेंगे कि वह सचमुच में परमेश्वर का पुत्र और सारे जगत का उद्धारकर्त्ता है।

जो मर चुका है

इस कार्यक्रम को सुननेवाले हमारे श्रोताओं में से अनेक लोग ऐसे हैं जो हमें समय-समय पर पत्र लिखते रहते हैं। और वास्तव में हमें प्रतिदिन अनेकों पत्र प्राप्त होते हैं। हमारे कुछ श्रोता ऐसे भी हैं, जो यह जानना चाहते हैं, कि हमारे प्रचार तथा कार्यक्रम का क्या उद्देश्य है ? क्या हम किसी "धर्म" का प्रचार कर रहे हैं ? या क्या हम लोगों को एक "धर्म" से दूसरे "धर्म" में लाने का प्रयत्न कर रहे हैं ? मित्रो, हमारा यह उद्देश्य कदापि नहीं है। और न ही हम किसी धर्म का प्रचार कर रहे हैं। हम तो केवल परमेश्वर के उस सुसमाचार का बयान कर रहे हैं जिसका वर्णन हमें परमेश्वर की पुस्तक बाइबल में इन शब्दों में मिलता है, कि, "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परंतु अनन्त जीवन पाए।" और, "परमेश्वर अपने प्रेम को हमारे प्रति इस प्रकार प्रदर्शित करता है कि जब हम पापी ही थे, मसीह हमारे लिये मर गया।" (यूहन्ना ३:१६; रोमियों ५:८)। प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु एक सुसमाचार है। उसकी मृत्यु में हमारे लिये एक खुशी का संदेश है। क्योंकि वह परमेश्वर की मर्ज़ी से हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस के ऊपर मरा था। इसीलिये जब वह परमेश्वर की इच्छा पूरी करके मृतकों में से जी उठा था, तो उसने अपने चेलों से कहा था, कि, "तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ : और देखो, मैं जगत के अंत तक सदैव तुम्हारे संग हूं।" उसने उनसे यह भी कहा था, कि "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार

प्रचार करो। जो विश्वास करें और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परंतु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६:१५,१६)। हमारा यह विश्वास है, कि परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह सारे जगत के पापों के लिये बलिदान हुआ था। और हमारा यह विश्वास है, कि जो कोई भी मनुष्य उस यीशु में अपने सारे मन से विश्वास लाएगा और उसकी आज्ञा को मानकर बपतिस्मा लेगा तो यीशु अपनी प्रतिज्ञानुसार उस मनुष्य का उद्धार करेगा। (प्रेरितों २२:१६)।

परंतु, यह सुनकर शायद कोई जन यह कहे, कि यदि उद्धार पाना इतना सरल है तो मनुष्य चाहे जैसा भी जीवन क्यों न व्यतीत करे, वह विश्वास करने तथा बपतिस्मा लेने के कारण स्वर्ग में चला जाएगा। परंतु बाइबल हमें ऐसी शिक्षा कदापि नहीं देती। वास्तव में बाइबल हमें यह सिखाती है, कि मसीह में विश्वास करने तथा उसमें बपतिस्मा लेने के द्वारा हम मसीह को पहिन लेते हैं, अर्थात् उसके भीतर आ जाते हैं। क्योंकि उसकी आज्ञा मानने के द्वारा हमारे जीवन के पिछले सब पाप, यीशु की मृत्यु के कारण, क्षमा हो जाते हैं। उस समय हम यीशु में अपना एक नया जीवन आरम्भ करते हैं; जो पहिले जीवन से बिल्कुल भिन्न होता है। बपतिस्मा प्रभु यीशु की एक ऐसी महत्वपूर्ण आज्ञा है जिसे मानकर मनुष्य स्वंय अपनी मृत्यु की घोषणा करता है। इस आज्ञा के द्वारा मनुष्य यह प्रदर्शित करता है कि वह अपने पुराने जीवन के लिये मर चुका है, और वह मरा हुआ पुराना मनुष्य दफनाया जा रहा है। और फिर जब बपतिस्मा लेकर वह मनुष्य जल में से बाहर आता है तो वह इस बात को प्रकट करता है कि अब वह मर चुका है, और गाड़ा जा चुका है, और अब फिर से जी उठकर वह एक नए जीवन की चाल चलेगा। इसीलिये प्रेरित पौलुस लिखकर बाइबल में एक जगह यूं कहता है, "क्या तुम नहीं जानते कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट

जाएंगे। क्योंकि हम जानते हैं, कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें।" (रोमियों ६:३-६)।

सो हम देखते हैं, कि बाइबल हमें यह बताती है कि यीशु मसीह का अनुयायी, अर्थात् एक मसीही वह व्यक्ति है जो मर चुका है। वह पहिले मनुष्य के समान नहीं है। उसका जीवन एक नया जीवन है। बाइबल कहती है, "सो जबकि तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं परंतु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ। क्योंकि तुम तो मर गए और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है।" (कुलुस्सियों ३:१-३)।

इफिसुस में रहनेवाले मसीही लोगों को लिखकर प्रेरित पौलुस उन से कहता है, कि परमेश्वर ने "तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे। जिन में तुम पहिले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है। इन में हम भी सब के सब पहिले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर, और मन की मनसाएं पूरी करते थे, और अन्य लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की संतान थे। परंतु परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिस से उस ने हम से प्रेम किया। जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया।" (इफिसियों २:१-५)।

यहां हम देखते हैं, कि, पहिले वे अपने पाप तथा अधर्म में मरे हुए थे। उनके पास आत्मिक जीवन नहीं था, क्योंकि वे अपने अपराधों के कारण पवित्र परमात्मा यानि परमेश्वर से अलग थे। परंतु अब मसीह के द्वारा वे पाप के लिये मर गए थे। वे उस पर विश्वास करके और उसकी आज्ञा मानकर अब उस की मृत्यु और उसके जी उठने की समानता में उसके साथ एक हो गए थे। अब वे पाप में नहीं परंतु पवित्रता में अपना जीवन बिताते थे। अब वे पृथ्वी पर

की नहीं परंतु स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहते थे। अब वे अपने शरीर की लालसाओं के अनुसार नहीं परंतु परमेश्वर के पवित्रात्मा की अगुवाई में चलते थे। प्रेरित पोलुस ने बाइबल में एक जगह पवित्रात्मा की प्ररेणा से यूं लिखा था, "पर मैं कहता हूं, आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे। क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं; इसलिये कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ। और यदि तुम आत्मा के चलाए चलते हो, तो व्यवस्था के आधीन न रहे।" क्योंकि, "शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात व्यभिचार, गंदे काम, लुचपन, मूर्ति-पूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म और डाह, मतवालापन, लीला-क्रीड़ा और इन के ऐसे और काम हैं, इन के विषय में मैं तुमको पहिले से कह देता हूं जैसा पहिले कह भी चुका हूं, कि ऐसे-ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे। पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई" और "विश्वास, नम्रता और संयम है; ऐसे-ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं। और जो मसीह यीशु के हैं उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है।" (गलतियों ५:१६-२४)।

मित्रो, मेरा विश्वास है, कि इन बातों से आप इस सच्चाई को स्पष्टता से देख सकते हैं कि मसीही जीवन वास्तव में एक उत्तम और एक निराला और चाहनेयोग्य जीवन है। क्योंकि इस जीवन में उद्धार पाने की और परमेश्वर के स्वर्ग में अनन्त जीवन पाने की आशा है। मसीही जीवन न केवल पृथ्वी के दृष्टिकोण से ही सुंदर है, परंतु यह एक ऐसा जीवन है जिस से हमारा परमेश्वर भी प्रसन्न होता है और जिस से उसके नाम की प्रशंसा होती है। अपने अनुयायियों से ऐसे ही जीवन की आशा रखकर प्रभु मसीह ने उन से कहा था कि तुम इस जगत की ज्योति हो, सो तुम्हारा उजियाला सब मनुष्यों के सामने तुम्हारे चाल-चलन से इस प्रकार चमके कि लोग तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें। (मत्ती ५:१६)।

सो मेरी आशा है, कि आप भी इस सुंदर जीवन को अपनाना चाहेंगे। आपको चाहिए कि आप अपने सारे मन से मसीह में विश्वास ले आएं और

अपने प्रत्येक पाप से मन फिराकर, और बपतिस्मा लेकर मसीह को पहिन लें, और फिर मसीह के जीवन का पालन करें। ऐसा करके आप न केवल अपनी ही आत्मा को बचाएंगे, परंतु न जाने कितने ही अन्य लोग आप के नए जीवन से प्रभावित होकर हमारे उद्धारकर्त्ता मसीह के पास आ जाएंगे। उसी की महिमा युगानुयुग तक होती रहे।

जो कभी नहीं मरेगा

मनुष्य को यदि किसी भी वस्तु से सबसे अधिक भय लगता है तो वह वस्तु है "मृत्यु" क्योंकि कोई भी मनुष्य मरना नहीं चाहता। हम सब को अपने-अपने जीवन से बड़ा ही प्रेम है। हम चाहते हैं कि हमारी आयु और अधिक लम्बी हो। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अधिक आयु पाने के लिये भांति-भांति की वस्तुओं का सेवन करते हैं। और इसमें कोई संदेह नहीं, कि यदि यह बात मनुष्य के वश की होती, कि वह अपनी आयु को अपनी इच्छा से लम्बी कर लेता, या किसी ऐसी वस्तु की खोज कर लेता जिस के द्वारा वह मृत्यु से बच जाता, तो वह उस वस्तु को प्राप्त करने के लिये कुछ भी देना या करना अधिक नहीं समझता। क्योंकि मनुष्य को सबसे अधिक अपने जीवन से प्रेम है; और सब से अधिक भय उसे मृत्यु से लगता है। देश-विदेशों में अनुसंधान हो रहे हैं; नई-नई दवाईयों की खोज की जा रही है। लोगों को बीमारियों से बचाने के लिये बड़े-बड़े कीमती इलाज किए जा रहे हैं। और यह सच है, कि हम मनुष्य की आयु को कुछ समय के लिये बढ़ाने में अवश्य सफल हो गए हैं। परंतु मृत्यु का भय मनुष्य पर अभी भी ज्यों का त्यों ही बना हुआ है। हम सब इस बात को जानते हैं कि एक न एक दिन सभी को मरना है। सब इस बात से परिचित हैं, कि वह एक दिन उन के जीवन में अवश्य आएगा जब न उनकी शक्ति, और न उनका धन उन्हें मृत्यु से बचा सकेंगे। कभी-कभी मनुष्य के मन में यह विचार आता है, कि लोग क्यों मरते हैं ? पवित्र बाइबल में लिखा है, कि, "इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई ; इसलिये कि सब ने पाप किया है।" (रोमियों ५:१२)।

मृत्यु का कारण पाप है। परंतु शारीरिक मृत्यु पाप के दण्ड के फलस्वरुप नहीं है, किन्तु यह मृत्यु पाप के परिणाम स्वरुप है। पहिले मनुष्य के पाप के कारण मृत्यु, अर्थात् शारीरिक मृत्यु पृथ्वी पर सब मनुष्यों में फैल गई। और पाप का यह परिणाम ऐसा भयानक सिद्ध हुआ कि वे छोटे और मासूम बालक भी अकसर मर जाते हैं जिन्होंने स्वंय कभी कोई पाप नहीं किया था। परंतु बाइबल में हम एक और मृत्यु के बारे में पढ़ते हैं। बाइबल कहती है, "जो प्राणी पाप करे वही मरेगा, न तो पुत्र पिता के अधर्म का भार उठाएगा और न पिता पुत्र का ; धर्मी को अपने ही धर्म का फल, और दुष्ट को अपनी ही दुष्टता का फल मिलेगा।" (यहेजकेल १८:२०)। यह वह मृत्यु है जो मनुष्य को पाप के दण्ड के फलस्वरुप मिलती है। अर्थात् शारीरिक मृत्यु पाप का परिणाम है, और प्रत्येक मनुष्य के लिये परमेश्वर की ओर से निश्चित है। परंतु आत्मिक मृत्यु पाप का दण्ड है, जो प्रत्येक उस मनुष्य को मिलेगा जो परमेश्वर की इच्छा को नहीं मानता और उसकी मर्ज़ी पर नहीं चलता। जैसे कि हम पहिले मनुष्य के बारे में बाइबल में पढ़ते हैं, कि परमेश्वर ने उस से कहा था कि जिस दिन तू मेरी आज्ञा तोड़ेगा उसी दिन तू अवश्य मर जाएगा। (उत्पत्ति २:१७)। परंतु जब मनुष्य ने आरम्भ में परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ा था, तो उस समय वह शारीरिक रुप से नहीं मरा था, लेकिन हम पढ़ते हैं, कि परमेश्वर ने उस मनुष्य को अपनी उपस्थिति में से निकाल दिया था और अपना संबंध मनुष्य से तोड़ लिया था, और यही आत्मिक मृत्यु है। जिस प्रकार से मनुष्य की आत्मा और देह का संबंध टूट जाने पर मनुष्य की शारीरिक रुप से मृत्यु हो जाती है, उसी प्रकार मनुष्य का परमेश्वर से संबंध टूट जाने पर मनुष्य आत्मिक रुप से मर जाता है।

एक और बात मृत्यु के विषय में हम यह देखते हैं, कि मृत्यु विश्वव्यापि है। अर्थात् सारी पृथ्वी पर मृत्यु का राज्य है। जहां कहीं भी जीवन है वहां मृत्यु भी विद्यमान है। और न केवल शारीरिक मृत्यु ही विश्वव्यापी है, परंतु उसी प्रकार आत्मिक मृत्यु भी विश्वव्यापी है। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि सब मनुष्य पाप के वश में हैं और उन में कोई भी धर्मी नहीं है, और सब ने पाप किया है।

और पाप की मजदूरी मृत्यु है। (रोमियों ३:१०, ११,२३)। जब मनुष्य का जन्म होता है तो उस समय उस के भीतर कोई पाप नहीं होता। परंतु जब वह बड़ा होकर उस आयु में प्रवेश करता है जिसमें वह अच्छाई और बुराई और धर्म और अधर्म को समझने लगता है, तो परमेश्वर की इच्छानुसार न चलकर वह उसके लेखे में पापी ठहरता है, और पाप के कारण उसका संबंध परमेश्वर से टूट जाता है। यही आत्मिक मृत्यु है, जिसके कारण आज सारा जगत परमेश्वर से दूर और अलग है।

परंतु क्या आप जानते हैं, कि बाइबल हमें यह भी बताती है, कि कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कभी नहीं मरेंगे ? प्रभु यीशु ने कहा था, कि, "जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परंतु वह मृत्यु के पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।" (यूहन्ना ५:२४)। एक अन्य जगह बाइबल में हम लाजर नाम के एक आदमी के बारें में पढ़ते हैं। लाजर यीशु का मित्र था, और अपनी दो बहिनों के साथ बैतनिय्याह नाम के एक गांव में रहता था। परंतु ऐसा हुआ कि लाजर बहुत बीमार पड़ा, और मर गया। जब इस बात का पता प्रभु यीशु को लगा तो यीशु ने कहा, कि यह बीमारी मृत्यु की नहीं, परंतु परमेश्वर की महिमा के लिये है, ताकि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो। यीशु जानता था, कि लाजर उसकी सामर्थ से फिर जी उठेगा, सो अपने चेलों से उसने कहा, कि हमारा मित्र लाजर सो गया है, और मैं जाकर उसे जगाऊंगा। और फिर हम आगे पढ़ते हैं कि जब वह बैतनिय्याह में आया तो उसने लाजर की बहन मरथा से कहा, कि तेरा भाई जी उठेगा। मरथा ने यीशु से कहा, कि यह तो मैं भी जानती हूं कि अंतिम दिन में पुनरुत्थान के समय वह अन्य सभी मृतकों के समान जी उठेगा। परंतु यीशु ने उस से कहा, कि, "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा। और जो कोई जीवता है और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा।" (यूहन्ना ११:२५,२६)। इसके आगे हम बाइबल में पढ़ते हैं, कि यीशु ने लाजर की कब्र पर आकर लाजर को आवाज देकर बुलाया। और वहां पर खड़े सब लोग यह देखकर आश्चर्य-चकित हो गए कि चार दिन पहिले जो

लाजर मर गया था, और जिसे उन्हों ने कब्र के भीतर गाड़ दिया था, वही लाजर यीशु की आवाज सुनकर कब्र में से बाहर आ गया था। और बहुतेरे लोगों ने यीशु में विश्वास किया, कि वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है!

यहां जिस खास बात को हम देखते हैं, वह यह है कि यीशु ने कहा था, कि पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं और जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए तौभी जीएगा। और जो कोई जीवता है और मुझ पर विश्वास रखता है वह कभी नहीं मरेगा। क्या कोई इंसान ऐसा दावा कर सकता है ? क्या कोई मनुष्य ऐसी प्रतिज्ञा कर सकता है ? यीशु ने कहा था, कि जो मनुष्य मुझ पर विश्वास रखता है मृत्यु उसके जीवन को समाप्त नहीं कर सकती और जो मुझ पर विश्वास रखता है वह कभी नहीं मरेगा! पर यीशु ने ऐसा क्यों कहा ? इसका अर्थ क्या है ? क्या उसमें विश्वास रखनेवाले लोग पृथ्वी पर अन्य लोगों की तरह मृत्यु का सामना नहीं करते ? यीशु को स्वंय भी मृत्यु की सच्चाई का सामना करना पड़ा था। तो फिर यीशु ने ऐसा क्यों कहा था?

वास्तव में बात यह है, कि प्रभु यीशु यहां लाजर की शारीरिक मृत्यु के द्वारा लोगों को एक बहुत बड़ा आत्मिक पाठ सिखा रहा था। वह जमीन पर इसलिये नहीं आया था कि वह लोगों को कब्रों में से जिन्दा करे, परंतु वास्तव में वह पृथ्वी पर पाप में खोए हूए लोगों को ढूंढ़ने और उन्हें पाप से बचाने के लिये आया था। (लूका १६:१०)। वह लोगों को शारीरिक जीवन नहीं, परंतु आत्मिक तथा अनन्त जीवन देने के लिये आया था। उसने कहा था, कि मैं इसलिये आया हूं कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं। (यूहन्ना १०:१०)। वह पृथ्वी पर इसलिये आया था ताकि वह उस कारण को दूर कर दे जिसके फलस्वरुप मनुष्य और परमेश्वर अलग हैं। वह उस दीवार को ढाने के लिये आया था ; और उस खाई को भरने के लिये आया था जिसके कारण मनुष्य अपने परमेश्वर से दूर और अलग था। वह मनुष्य को आत्मिक मृत्यु के वश से छुड़ाकर उसे आत्मिक जीवन देने आया था। और वह इसलिये आया था

कि मनुष्य का परमेश्वर के साथ मेल करा दे।

पवित्र बाइबल में हम पढ़ते हैं, कि, परमेश्वर का प्रेम हम पर इसी से प्रकट हुआ कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को संसार में भेज दिया कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं। प्रेम इस बात में नहीं है कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया पर इसमें है कि उसने हम से प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेज दिया। (१ यूहन्ना ४:६,१०)। क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा हमारे प्रभु यीशु ने हम सब के पापों का प्रायश्चित किया था। वह हमारे स्थान पर हमारे पापों के लिये मारा गया था। बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने उसे, पापरहित होते हुए भी, हमारे लिये पाप ठहराया था और उसे एक अपराधी की नाईं दण्ड दिलवाया था, ताकि उसके भीतर या उसके द्वारा हम परमेश्वर के निकट धर्मी बन जाएं और हमारा मेल परमेश्वर के साथ हो जाएं। (२ कुरिन्थियों ५:१७-२१)। इसलिये, जब हम यीशु की मृत्यु का सुसमाचार सुनकर उस पर यह विश्वास लाते हैं कि वह परमेश्वर का पुत्र हमारे पापों के लिये क्रूस पर मरा था, और अपने पापों से मन फिराते हैं, और यीशु की आज्ञा मानकर बपतिस्मा लेते हैं तो हम प्रभु यीशु की मृत्यु के द्वारा अपने पापों से मुक्ति प्राप्त करके परमेश्वर के साथ अपना मेल कर लेते हैं। पाप के कारण जो आत्मिक जीवन हमारे पास नहीं था उसे हम यीशु के द्वारा फिर से प्राप्त कर लेते हैं। और उसकी आज्ञाओं पर चलकर, उसमें बने रहने से, हमें यह आशा मिलती है कि फिर हम कभी नहीं मरेंगे, अर्थात् अपने परमेश्वर से फिर कभी पाप करके अलग नहीं होंगे।

क्या आप के पास यह महान् आशा है ? यीशु जो हमारे पापों का प्रायश्चित है वह आपको हमेशा का जीवन देना चाहता है। वह चाहता है कि हम सब उस अनन्त जीवन को पाएं और बहुतायत से पाएं।

जिस ने मसीह को पहिन लिया है

एक बार फिर से इस अवसर के लिये हम अपने परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं। इस समय हम उन बातों को देखने जा रहे हैं जिन्हें परमेश्वर ने अपने पवित्र आत्मा की प्रेरणा से अपनी पुस्तक बाइबल में हमारे लिये प्रकट किया है। बाइबल में परमेश्वर ने मनुष्य के लिये एक मार्ग को प्रकट किया है। क्योंकि मनुष्य को एक मार्ग की आवश्यकता है। आज हम एक ऐसे संसार में रहते हैं जिस में अनेक धर्म हैं। अब संसार का कोई भी धर्म ऐसा नहीं है जो अच्छी बातें नहीं सिखाता। बाइबल भी हमें सिखाती है कि हमें अच्छे और सद्गुण के काम करने चाहिए। परंतु यदि बाइबल का एकमात्र यही उद्देश्य होता, तो फिर बाइबल को पढ़ने तथा उसकी शिक्षाओं का प्रचार करने का कोई विशेष उद्देश्य नहीं होता। क्योंकि जहां तक अच्छे तथा भले कामों का प्रश्न है, इसकी शिक्षा तो सभी धर्म देते हैं। परंतु संसार के धर्मों और बाइबल में हमें एक विशेष अंतर यह मिलता है कि बाइबल में हम एक ऐसे मार्ग के बारे में पढ़ते हैं जो मनुष्य को परमेश्वर के पास ले जाता है। परमेश्वर केवल एक है। और उसके पास आने का मार्ग भी केवल एक ही है। और वह मार्ग हमें केवल बाइबल में मिलता है। हम अच्छे तथा भलाई के काम कर सकते हैं, परंतु हमारे अच्छे काम हमारे बुरे कामों पर पर्दा नहीं डाल सकते। क्योंकि परमेश्वर के लेखे में सभी मनुष्य पापी हैं। कोई इंसान पृथ्वी पर यह नहीं कह सकता कि उसने कभी कोई पाप नहीं किया है। पवित्र बाइबल कहती है, कि सब ने पाप किया है और सब परमेश्वर से अपने पाप के कारण अलग हैं। इसलिये महत्व की बात यह नहीं है, कि आज हम कितने अच्छे और भलाई के काम कर सकते हैं, परंतु विशेष बात यह है कि हम अपने उन पापों की क्षमा किस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं जिन्हें हम ने अपने जीवन में किया है। हमारे बाइबल अध्ययन का

एक विशेष उद्देश्य यही है। इस प्रचार का एक विशेष उद्देश्य यही है। हम यह जानना चाहते हैं, कि मनुष्य अपने पापों से किस प्रकार उद्धार प्राप्त कर सकता है।

पवित्र बाइबल में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, कि, "विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।" (इफिसियों २:८,९)। सो बाइबल हमें यह बताती है, कि हमारा उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह से होता है। इसलिये नहीं कि हमने कुछ किया है, परंतु इसलिये क्योंकि परमेश्वर ने हम से ऐसा प्रेम रखा कि उसने हमारे ऊपर दया करके हमारे लिये कुछ किया है। बाइबल में लिखा है कि "परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों ५:८)। मसीह प्रत्येक मनुष्य के लिये परमेश्वर का अनुग्रह है। क्योंकि एक अन्य स्थान पर बाइबल में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, कि, "तुम जानते हो, कि वह धनी हो कर भी तुम्हारे लिये कंगाल बन गया, ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ।" (२ कुरिन्थियों ८:५)। मसीह हमें धनी बनाने के लिये कंगाल बन गया था। कितना बड़ा अनुग्रह इस बात में हम देखते हैं। वह स्वर्ग में परमेश्वर के साथ था। वह परमेश्वरत्व में एक व्यक्तित्व था। वह परमेश्वर था परंतु, वह एक मनुष्य बन गया। "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।" बाइबल हमें बताती है। और फिर लिखा है कि, "वचन देहधारी हुआ ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।" (यूहन्ना १:१,१४)। सो पृथ्वी पर मनुष्य के रुप में आया मसीह वास्तव में वह वचन-परमेश्वर था जो स्वर्ग में परमेश्वर के साथ था। परंतु मनुष्य को स्वर्ग का मार्ग बताने के लिये, और मनुष्य को स्वर्ग के योग्य बनाने के लिये, और मनुष्य का उद्धार करने के लिये वह जगत में आ गया। उसने स्वर्ग को छोड़ दिया; उसने उस महिमा और सम्मान को छोड़ दिया जो उसे स्वर्ग में परमेश्वर के साथ प्राप्त थे। और न केवल यही, परंतु उसके बारे में बाइबल

आगे कहती है, कि, "जिस ने परमेश्वर के स्वरुप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरुप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रुप में प्रकट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।" (फिलिप्पियों २:६-८)। प्रभु यीशु मसीह वास्तव में हमारे लिये कंगाल बन गया। और बाइबल कहती है, कि हमें परमेश्वर के निकट धर्मी बनाने के लिये उसने हमारे पापों को स्वयं अपने ऊपर ले लिया। वह हमारे स्थान पर, हमारे पापों के कारण, सताया गया और दोषी ठहराया गया, और मारा गया। (२ कुरिन्थियों ५:२१)।

इसीलिये उसने यह घोषणा की थी कि मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता। (यूहन्ना १४:६)। यानि, यदि हम सच्चाई से परिचित होना चाहते हैं, और यदि हम अनन्त जीवन पाना चाहते हैं, और यदि हम परमेश्वर के मार्ग पर चलकर उसके पास आना चाहते हैं, तो हमें यीशु मसीह के पास आना चाहिए। बाइबल के द्वारा हमें यह मुक्ति का संदेश मिलता है, कि, "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परंतु अनन्त जीवन पाएं"। (यूहन्ना ३:१६)। और बाइबल कहती है, कि, "तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की संतान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्हों ने मसीह को पहिन लिया है।" (गलतियों ३:२६,२७)। अर्थात् जब तक हम यीशु मसीह में विश्वास नहीं ले आते हैं हम परमेश्वर की संतान नहीं बन सकते। क्योंकि यीशु के बिना हम अपने पापों के कारण परमेश्वर से अलग हैं। उसने अपने आप को बलिदान करके हमारे पापों का प्रायश्चित किया है, इसीलिये अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करके परमेश्वर की संतान बनने के लिये हमें यीशु में विश्वास लाना आवश्यक है। परंतु, फिर, बाइबल में से अभी हमने पढ़ा था कि तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्हों ने मसीह को पहन लिया है। अर्थात् मसीह को पहिन लेने के लिये, मसीह के भीतर हो जाने के

लिये, प्रत्येक मनुष्य के लिये आवश्यक है कि वह उसमें बपतिस्मा ले। जब एक विश्वासी मनुष्य का बपतिस्मा होता है, तो वह बपतिस्मा लेने के द्वारा जल के भीतर गाड़ा जाता है और उसमें से बाहर आता है। (कुलुस्सियों २:१२; प्रेरितों ८:३८-३९)। इस प्रकार वह मनुष्य यीशु मसीह की मृत्यु और उसके कब्र में गाड़े जाने और उसके जी उठने की समानता में उसके साथ एक हो जाता है। इस तरह से वह मसीह को पहन लेता है और उसके भीतर आ जाता है।

इसीलिये बाइबल में एक मसीही व्यक्ति के लिये कहा गया है, कि वह नई सृष्टि है। (२ कुरिन्थियों ५:१७)। क्योंकि उसने अपने पुराने इंसान के स्थान पर एक नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है। एक मसीही को सम्बोधित करके बाइबल कहती है, कि तुम ने अपने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है और एक नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है। (कुलुस्सियों ३:९,१०)। और वह नया मनुष्यत्व यीशु मसीह है। इसी कारण प्रभु यीशु मसीह के अनुयायी मसीही कहलाते हैं। वे उसके नाम से कहलाना चाहते हैं, वे उसे पहिन कर उसका सा जीवन व्यतीत करना चाहते हैं। एक जगह प्रेरित पौलुस अपने बारे में लिखकर बाइबल में कहता है, कि, "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिये अपने आप को दे दिया।" (गलतियों २:२०)। कितना बड़ा परिवर्तन यहां हम इस मसीही प्रेरित के जीवन में देखते हैं। वह अपने आप को मरा हुआ समझकर, अपने भीतर मसीह यीशु को जीवित बताता है, क्योंकि उसने वास्तव में मसीह को पहिन लिया था। उसने मसीह में विश्वास किया था और अपने पापों को धो डालने के लिये उसमें बपतिस्मा लिया.था। (प्रेरितों ९:१८; २२:१६)।

और ऐसे ही यदि आप परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह में विश्वास करेंगे और उसकी आज्ञा मानकर उसे पहिन लेंगे, तो आप का जीवन भी एक नया जीवन हो जाएगा; वह नया जीवन जो परमेश्वर के मार्ग पर विश्वास से चलता है; और जिस में अनन्त जीवन पाने की आशा है।

जो अपना भविष्य जानता है

इस समय हम परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं, जिसने हमें यह जीवन दिया है और यह सुंदर अवसर दिया है जिसमें हम अब उसके वचन की बातों को सुनेंगे। आज हम अपने पाठ में २ कुरिन्थियों की पत्री के पांचवें अध्याय से बाइबल में से पढ़ने जा रहे हैं। यहां लेखक इस प्रकार कहता है:

"क्योंकि हम जानते हैं, कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं, परंतु चिरस्थाई है। इस में तो हम कहरते, और बड़ी लालसा रखते हैं; कि अपने स्वर्गीय घर को पहिन लें। कि इसके पहिनने से हम नंगे न पाए जाएं। और हम इस डेरे में रहते हुए बोझ से दबे कहरते रहते हैं; क्योंकि हम उतारना नहीं, वरन और पहिनना चाहते हैं, ताकि वह जो मरनहार है जीवन में डूब जाए। और जिस ने हमें इस बात के लिए तैयार किया है वह परमेश्वर है, जिसने हमें बयाने में आत्मा भी दिया है। सो हम सदा ढाढ़स बांधे रहते हैं और यह जानते हैं; कि जब तक हम देह में रहते हैं, तब तक प्रभु से अलग हैं। क्योंकि हम रुप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं। इसीलिये हम ढाढ़स बाधें रहते हैं, और देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना और भी उत्तम समझते हैं। इस कारण हमारे मन की उमंग यह है, कि चाहे साथ रहें, चाहे अलग रहें ; पर हम उसे भाते रहें। क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय-आसन के सामने खुल जाए कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले-बुरे कामों का बदला, जो उसने देह के द्वारा किए हों, पाए।"

यहां बाइबल का लेखक मनुष्य की देह की तुलना एक घर से कर रहा है। मनुष्य की देह एक घर के समान है, जिसके भीतर उसका वास्तविक व्यक्तित्व रहता है। मिट्टी के बने हुए घर चाहे कितने भी मजबूत क्यों न हों एक दिन वे अवश्य ही गिर जाएंगे। और ठीक यही बात मनुष्य की देह के

विषय में भी सच है। प्रत्येक मनुष्य की देह, जो कि मिट्टी के समान है, एक दिन अवश्य ही मिट्टी में मिल जाएगी। पवित्र बाइबल हमें बताती है, कि जब मनुष्य को परमेश्वर ने सबसे पहिले पृथ्वी पर उत्पन्न किया था, तो उसे परमेश्वर ने मिट्टी से बनाया था, और फिर परमेश्वर ने उसके भीतर अपने आत्मिक जीवन का श्वास फूंका था। (उत्पत्ति २:७)। परंतु जब मनुष्य परमेश्वर की आज्ञा को तोड़कर पापी बन गया था, तो उसने मनुष्य को अपने से अलग कर दिया था, और उस समय परमेश्वर ने उस प्रथम मनुष्य से कहा था, कि तू "अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा ; क्योंकि तू उसी में से निकाला गया है, तू मिट्टी तो है, और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा।" (उत्पत्ति ३:१६)। और इस सच्चाई को इस पृथ्वी पर हम प्रतिदिन अपनी आंखों से देखते हैं। यह एक हकीकत है।

परंतु जिस वर्णन को अभी बाइबल में से हमने पढ़ा था उस में हमें एक बहुत बड़ी तथा महान् आशा दिखाई पड़ती है। क्योंकि वहां लेखक कहता है, कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा यह घर गिराया जाएगा, तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा जो हाथों से बने हुए मिट्टी के घर के समान नहीं है, परंतु वह एक ऐसा घर है जो चिरस्थाई है, यानि एक ऐसा घर है जो हमेशा तक खड़ा रहेगा। कितना महान् विचार है यह! परंतु उस स्वर्गीय घर में प्रवेश करने के लिये यह बड़ा ही आवश्यक है कि हम अपने आपको उस में प्रवेश करने के योग्य बनाएं। और यह काम हमें पृथ्वी पर के इस डेरे सरीखे घर के गिराए जाने से पहिले करना है। यदि हम परमेश्वर के उस पवित्र तथा स्वर्गीय घर में जाकर रहना चाहते हैं तो हमें चाहिए कि हम उस में प्रवेश करने के योग्य बनें। क्योंकि परमेश्वर के वचन की पुस्तक में लिखा है, कि, "उस में कोई अपवित्र वस्तु या घृणित काम करने वाला, या झूठ का गढ़नेवाला, किसी रीति से प्रवेश न करेगा ; पर केवल वे लोग जिनके नाम मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखें है।" (प्रकाशितवाक्य २१:२७)। "मेम्ना" पवित्र बाइबल में प्रभु यीशु को कहा गया है। एक अन्य स्थान पर बाइबल में यीशु के बारे में लिखा है, कि, "यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है।" (यूहन्ना १:२६)। जिस समय यीशु का

जन्म हुआ था उस समय लोग अपने पापों का प्रायश्चित करने के लिये पशुओं और विशेषकर मेम्नों का बलिदान चढ़ाते थे। इस प्रथा को आज भी अनेक स्थानों पर देखा जा सकता है। लेकिन पवित्र बाइबल में लिखा है, कि यह असम्भव बात है कि पशुओं का लोहू मनुष्य के पापों को दूर करे। (इब्रानियों १०:४)। इसीलिये परमेश्वर ने अपने पवित्र वचन को मनुष्य की समानता में जगत में भेज दिया। (यूहन्ना १:१, २,१४; फिलिप्पियों २:६-८)। यीशु ने परमेश्वर की मनसा से प्रत्येक मनुष्य के पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस के ऊपर मृत्यु का स्वाद चखा था। (इब्रानियों २:९)। उसके बारें में परमेश्वर की बाइबल हमें यूं बताती है, कि उस ने, "परमेश्वर के स्वरुप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरुप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रुप में प्रकट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।" (फिलिप्पियों २:६-८)। यीशु, अर्थात् परमेश्वर का वचन परमेश्वर के साथ और परमेश्वर के समान था, परंतु मनुष्य का उद्धार करने के लिये वह परमेश्वर की समानता को छोड़कर मनुष्य की समानता में होकर जगत में आ गया। और न केवल यही, परंतु उसने मनुष्य के पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस के ऊपर अपने आप को बलिदान कर दिया। यही कारण है कि बाइबल में यीशु को परमेश्वर का मेम्ना कहकर संबोधित किया गया है। और स्वर्ग के विषय में बाइबल कहती है, कि, "उसमें कोई अपवित्र वस्तु या घृणित काम करनेवाला, या झूठ का गढ़नेवाला, किसी रीति में प्रवेश न करेगा, पर केवल वे लोग जिनके नाम मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखे हैं स्वर्ग में प्रवेश करेंगे।"

आज संसार में हमारे सामने बड़े-बड़े प्रश्न हैं। हम अपनी समस्याओं को सुलझाने में प्रयत्नशील हैं। हम संसार को प्राप्त करना चाहते हैं, उसकी वस्तुओं को प्राप्त करना चाहते हैं। हम आगे बढ़ना चाहते हैं, उन्नति करना चाहते हैं। परंतु यदि हमारे नाम मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखे हुए नहीं हैं तो हमारे पास कोई आशा नहीं है। क्योंकि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा

सरीखा यह घर गिराया जाएगा, तो हमारा संबंध पृथ्वी पर की उन सब वस्तुओं से हमेशा के लिये टूट जाएगा जिन्हें हमने अपने लिये प्राप्त किया है और बनाया है। और हम उस अनन्तकाल में सदा के लिये चले जाएंगे जहां से कभी कोई वापस नहीं आता। परंतु उस अनन्तकाल में हम कहां रहेंगे ? यदि हमारे नाम परमेश्वर के मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखे हुए नहीं हैं, तो हम उस चिरस्थाई स्वर्गीय घर में जिसे परमेश्वर ने अपने पवित्र लोगों के लिये बनाया है, कदापि प्रवेश न करेंगे। क्योंकि उसमें कोई अपवित्र वस्तु प्रवेश नहीं कर सकती।

सो क्या आपका नाम परमेश्वर के मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ है ? इसका अर्थ यह है, कि परमेश्वर अपने उन लोगों को जानता है जिन्होंने उसके पुत्र यीशु के बलिदान को अपने पापों की छुड़ौती का प्रायश्चित मान लिया है। परमेश्वर उन लोगों को जानता है, जिन्होंने उस के पुत्र यीशु की आज्ञा को माना है, अर्थात् जिन्हों ने पाप से अपना मन फिराकर उसकी आज्ञा अनुसार अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लिया है (मत्ती २८:१९; प्रेरितों २:३८)। और जो प्रतिदिन अपना जीवन उसकी आज्ञानुसार व्यतीत करते हैं। वे उसमें अपने विश्वास के द्वारा तथा उसकी आज्ञा मानने के द्वारा उसके लोहू में धुलकर अपने पापों से पवित्र हो चुके हैं। वे लोग अपने भविष्य को जानते हैं। जैसे कि प्रेरित पौलुस मसीह के अनुयायियों को लिखकर कहता है, कि, "हम जानते हैं, कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं, परंतु चिरस्थाई है।"

पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य अपने भविष्य के प्रति चिन्तित है। इंसान भविष्य के लिये पैसे जोड़ता है, धन-सम्पति इकट्ठा करता है, घर बनवाता है। परंतु क्या आप अपने भविष्य के जीवन के संबंध में यह कह सकते हैं, कि जब मेरा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो मुझे परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं, परंतु चिरस्थाई है ? मित्रो, यह बात सच है, कि पृथ्वी पर मनुष्य का जीवन बहुत ही

छोटा है, परंतु अनन्तकाल, जिसमें मनुष्य हमेशा के लिये रहेगा, बड़ा ही लम्बा है। इसीलिये मनुष्य को चाहिए कि वह अपनी मरनहार देह के भविष्य की चिन्ता न करे। और इस जीवन के रहते इस बात को निश्चित कर ले, कि अपनी देह के डेरे से अलग होकर वह परमेश्वर के उस स्वर्गीय घर में प्रवेश करेगा जहां उसके लोग सदा उसके साथ रहेंगे। यह आशा केवल उन्हीं लोगों के पास है, जिन्होंने परमेश्वर की इच्छा को माना है, और जो उसकी इच्छा पर चलते हैं। और यह आशा आज आपकी भी हो सकती है, यदि आप उसकी इच्छा को मानकर उसके पुत्र यीशु में विश्वास लाएंगे और मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेंगे।

जो पीछे मुड़कर नहीं देखता

बाइबल में लूका की पुस्तक के नौवें अध्याय में हम इस प्रकार पढ़ते हैं कि एक बार जब प्रभु यीशु अपने चेलों के साथ मार्ग में जा रहा था "तो किसी ने उस से कहा, जहां-जहां तू जाएगा मैं तेरे पीछे हो लूंगा। यीशु ने उस से कहा, लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं, पर मनुष्य के पुत्र को सिर धरने की भी जगह नहीं है। फिर उसने दूसरे से कहा, कि मेरे पीछे हो ले ; उस ने कहा ; हे प्रभु, मुझे पहिले जाने दे कि अपने पिता को गाड़ दूं। उसने उससे कहा, मरे हुओं को अपने मुरदे गाड़ने दे, पर तू जाकर परमेश्वर के राज्य की कथा सुना।" इसके बाद, "एक और ने भी कहा; हे प्रभु, मैं तेरे पीछे हो लूंगा; पर पहिले मुझे जाने दे कि अपने घर के लोगों से विदा हो आऊं। यीशु ने उस से कहा; जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं।" (लूका ९:५७-६२)।

पृथ्वी पर सबसे बड़ा काम जो कोई भी मनुष्य कर सकता है, वह है यीशु के पीछे हो लेना। क्योंकि यीशु वह मार्ग है जो मनुष्य को परमेश्वर के पास ले जाता है; यीशु वह सच्चाई है जिसके बिना मनुष्य परमेश्वर का मार्ग जान नहीं सकता; और यीशु वह जीवन है जिसके बिना मनुष्य अपने पापों में मरा हुआ है। बाइबल में एक जगह हम यूं पढ़ते हैं, कि पृथ्वी पर मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यही है कि वह परमेश्वर का भय माने और उसकी आज्ञाओं का पालन करे। (सभोपदेशक १२:१३)। और अपनी बाइबल में परमेश्वर हमें आज्ञा देकर कहता है, कि हम उसके पुत्र यीशु मसीह की सुनें। (मत्ती १७:५)। हमें यीशु के पीछे हो लेने की आवश्यकता है, हमें उसका अनुसरण करने की आवश्यकता है, क्योंकि केवल वही हमारे पापों से हमारा उद्धार कर सकता है।

केवल वही हमारा मेल परमेश्वर के साथ करवा सकता है। केवल उसी के द्वारा हम परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करके अनन्त जीवन पा सकते हैं। उसके विषय में बाइबल यूं कहती है, कि, "पुत्र होने पर भी, उस ने दुख उठा-उठाकर आज्ञा माननी सीखी। और सिद्ध बनकर अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिये सदाकाल के उद्धार का कारण हो गया।" (इब्रानियों ५:८,९)। यीशु परमेश्वर का पुत्र होने पर भी सताया गया; उसने अनेक दुख उठाए; उसने हर तरह की कमी और घटी का सामना किया। बाइबल कहती है, यीशु के विषय में, कि वह सब बातों में हमारी नाईं परखा गया परंतु तौभी उसने कभी कोई पाप नहीं किया। (इब्रानियों ४:१५)। उसमें कोई पाप नहीं था। उसका जीवन निष्पाप था। फिर भी हम यह देखते हैं कि जब उसे यहूदियों तथा रोमी सरकार के सिपाहियों ने आकर पकड़ा था, और उस पर झूठे दोष लगाए थे, और उसे क्रूस पर चढ़ाया था, तो उसने अपने पक्ष में या अपने आपको मृत्यु दण्ड से बचाने के लिये कुछ भी नहीं कहा था। क्योंकि वह जानता था कि ऐसा उसके बारे में परमेश्वर की ओर से ठहराया गया था। वह पृथ्वी पर इसीलिये आया था, उसने पृथ्वी पर जन्म इसीलिये लिया था, कि वह मारा जाए, निर्दोष होने पर भी एक अपराधी की नाईं मारा जाए। क्योंकि उसकी मृत्यु के द्वारा परमेश्वर जगत के पापों का प्रायश्चित करना चाहता था। उसकी मृत्यु के द्वारा परमेश्वर संसार पर अपना प्रेम प्रकट करना चाहता था। बाइबल कहती है, कि, "जब हम निर्बल ही थे तब ठीक समय पर मसीह भक्तिहीनों के लिये मरा" क्योंकि, "दुर्लभ है कि किसी धर्मी मनुष्य के लिये कोई मरे; पर हो सकता है कि किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का साहस भी कर ले। परंतु परमेश्वर अपने प्रेम को हमारे प्रति इस प्रकार प्रदर्शित करता है कि जब हम पापी ही थे, मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों ५:६-८)।

इसलिये हमें यीशु का अनुसरण करना है, उस पर विश्वास लाकर उसकी आज्ञाओं को मानना है। क्योंकि परमेश्वर ने उसे हमारे उद्धार का मार्ग ठहराया है। वह हमारे पापों का प्रायश्चित है। वह परमेश्वर और मनुष्य के मध्य एक बिचवई है। यदि हम अपने पापों से मुक्ति पाना चाहते हैं, और यदि हम परमेश्वर के साथ अपना मेल करना चाहते हैं और यदि हम इस जीवन के

बाद आनेवाले जीवन में परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करके हमेशा की ज़िन्दगी पाना चाहते हैं, तो हमें चाहिए कि हम यीशु के पास आएं, और उसके पीछे हो लें। परंतु यीशु के पास केवल वही मनुष्य आ सकता है जो उसके पास इकहरे मन से आता है। क्योंकि यीशु कहता है, कि जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है वह मेरे योग्य नहीं है। अभी बाइबल में से हमने तीन व्यक्तियों के बारे में पढ़ा था। वे तीनो यीशु के पीछे हो लेना चाहते थे। उन्होनें यीशु के बारे में सुना था। उन्होंने उसके सामर्थपूर्ण कार्यों के विषय में सुना था, और शायद उन्हें स्वयं देखा भी था। सो वे यीशु के चेले बनना चाहते थे। वे उस के पीछे हो लेना चाहते थे। उनमें से एक ऐसा भी था जो यीशु के पीछे इसीलिये हो लेना चाहता था क्योंकि उसे किसी प्रकार के सांसारिक लाभ की आशा थी। परंतु यीशु उसके मन को जानता था। सो प्रभु ने उसे उत्तर देकर कहा था, कि तुझे देने के लिये जगत की कोई वस्तु मेरे पास नहीं है, और यहां तक, कि जंगल में रहनेवाली लोमड़ियों के पास रहने को भट होते हैं और उसी तरह से पक्षियों के पास अपने-अपने घोंसले होते है, परंतु मेरे पास तो सिर धरने तक की भी जगह नहीं है। और फिर कुछ और आगे बढ़कर प्रभु यीशु ने एक अन्य व्यक्ति से कहा था, कि मेरे पीछे हो ले। वह एक ऐसा मनुष्य था, जिसे जीवन से भी अधिक शरीर की चिन्ता थी। वह यीशु के पीछे तो आना चाहता था, लेकिन पहिले वह उस से भी अधिक एक और "महत्वपूर्ण" कार्य करना चाहता था। और वह, यीशु के पीछे हो लेने से भी बड़ा काम उसके लिये यह था, कि वह एक मुर्दे को गाड़ना चाहता था। यह आज उन लोगों का चित्र है जो अपने जीवन में सब से पहिले ऐश-ओ-आराम को देखते हैं, और फिर प्रभु के काम को देखते हैं। यह उन लोगों की तस्वीर है जो अपने धन को पहिले अपने सुख विलास के लिये इस्तेमाल करना चाहते हैं, और फिर थोड़ा-बहुत, बचा-कुचा प्रभु के सुसमाचार प्रचार के लिये दे देते हैं। यह ऐसे लोगों का उदाहरण है जो अपने समय को पहिले सिनेमा देखने में, या शिकार खेलने में या इसी प्रकार के अन्य कामों में लगाते हैं, और फिर बाद में थोड़ा-बहुत समय कभी-कभार निकालकर प्रभु की आराधना के लिये देते हैं। परंतु, सुनिये, प्रभु यीशु ने कहा था, कि इस प्रकार के लोग परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं हैं।

यीशु चाहता है, कि यदि हम उसके पीछे हो लेना चाहते हैं, तो हमारे जीवन में सबसे पहिला स्थान उसी का हो। क्योंकि केवल तभी हम उसकी प्रत्येक आज्ञा को मान सकेंगे और उसके आदर्श पर चल सकेंगे। इसलिये उसने कहा था, कि, "जो माता या पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं। और जो बेटे या बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है वह मेरे योग्य नहीं"। (मत्ती १०:३७,३८)। "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे," प्रभु ने कहा था, "तो अपने आप का इंकार करे और अपना क्रूस उठाए और मेरे पीछे हो ले।" (मत्ती १६:२४)। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम अपने माता-पिता से या अपने बालको से प्रेम न रखें। क्योंकि उसी प्रभु यीशु ने हमें यह भी सिखाया है कि हम अपने शत्रुओं से भी प्रेम रखें। परंतु यीशु ने हमें यह भी सिखाया है कि यदि हम उस के पीछे हो लेना चाहते हैं, यदि हम वास्तव में उसके चेले बनना चाहते हैं, तो हमारे जीवनों में किसी भी मनुष्य या किसी भी वस्तु का स्थान यीशु से बढ़कर न हो। उसका स्थान हमारे जीवनों में सबसे बड़ा और सबसे पहिला हो। वह हमारे जीवनों में दूसरा स्थान नहीं चाहता।

कभी-कभी कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो यीशु के क्रूस की कथा को सुनकर तुरन्त उस पर विश्वास ले आते हैं। और उसकी आज्ञा को सुनकर बपतिस्मा लेना चाहते हैं। परंतु उन के घर में कोई व्यक्ति ऐसा होता है जो इस बात का विरोध करता है। और इसलिये वे प्रभु की आज्ञा नहीं मानते। यह बात यह दिखाती है कि उन के जीवन में प्रभु और उसकी आज्ञा से भी अधिक स्थान उस मनुष्य का है जिसके कहने में आकर वे प्रभु की आज्ञा को भी नहीं मानते। वे प्रभु से भी अधिक उसका आदर करते हैं, उसका भय मानते हैं। इस प्रकार के लोग परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं हैं। "जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है" यीशु ने कहा था, "वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं है।"

इसलिये यदि हम प्रभु में विश्वास करते हैं, तो हमें उसकी आज्ञाओं को भी मानना चाहिए। कुछ लोगों से एक बार यीशु ने कहा था, कि जब तुम मेरी बातों को नहीं मानते तो फिर मुझे प्रभु-प्रभु क्यों कहते हो ? यीशु के पीछे हो लेना

ऐसा है जैसे कोई मनुष्य हल चलाता है। वह अपना हाथ हल पर रखता है और सामने देखता है। प्रेरित पौलुस अपने बारे में लिखकर एक जगह यूं कहता है कि, "यह मतलब नहीं की मैं पा चुका हूं, या सिद्ध हो चुका हूं: पर उस पदार्थ को पकड़ने के लिये दौड़ा चला जाता हूं, जिस के लिये मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था। हे भाईयो, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूं: परंतु केवल यह एक काम करता हूं, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उन को भूलकर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इनाम पाऊं, जिस के लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।" (फिलिप्पियों ३:१२-१४)।

क्या यही आप की भी आशा है ? यदि आप अपने सारे मन से यीशु मसीह में विश्वास लाएंगे, और प्रत्येक पाप से अपना मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेंगे, और अपने जीवन, में प्रत्येक बात में, सबसे पहिला स्थान उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु को ही देंगे, तो वह आप को स्वर्ग में अनन्त जीवन देगा। उसने प्रतिज्ञा की है, कि यदि हम उसके प्रति प्राण देने तक विश्वासी रहेंगे तो वह अंत में हमें जीवन का मुकुट देगा। (प्रकाशितवाक्य २:१०)।

जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है

यह समय हम सबके लिये बड़ा ही महत्वपूर्ण है। क्योंकि जिन बातों को इस थोड़े से समय में अब हम देखने जा रहे हैं उन के द्वारा हमारा सम्पूर्ण जीवन परिवर्तित हो सकता है। परमेश्वर के वचन की पुस्तक पवित्र बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने पृथ्वी पर सारे लोगों से ऐसा महान् प्रेम रखा है कि उसने अपने इकलौते पुत्र मसीह यीशु को सारे जगत के पापों का प्रायश्चित बनाकर बलिदान कर दिया। पृथ्वी पर ऐसा कोई इंसान नहीं है जिसने कभी कोई पाप न किया हो। और केवल परमेश्वर ही मनुष्य को पाप से छुटकारा दिला सकता है। और बाइबल कहती है, कि परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा जमीन पर हर एक इंसान को पाप से मुक्ति प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया है। क्या आप जानते हैं, कि यीशु क्रूस के ऊपर क्यों मरा था ? क्या आपने कभी यीशु के बारे में सुना है ? क्या आप ने सुना है, कि उसे एक क्रूस के ऊपर चढ़ाकर मृत्यु दण्ड दिया गया था ? क्या आप जानते हैं इसका क्या कारण था ? यीशु ने कभी कोई पाप नहीं किया था, उसमें कोई बुराई नहीं थी। उसने कभी किसी को गाली नहीं दी थी; उसने कभी कोई झूठ नहीं बोला था; उसमें कोई भी दोष नहीं था। बाइबल में हम उसके जीवन की पूरी कहानी को पढ़ते हैं, और वहां लिखा है, कि वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया लेकिन तौभी निष्पाप निकला। (इब्रानियों ४:१५)। और फिर परमेश्वर की पुस्तक में इस प्रकार लिखा है: "क्योंकि यदि कोई परमेश्वर का विचार करके अन्याय से दुख उठाता हुआ क्लेश सहता है तो यह सुहावना है। क्योंकि यदि तुम ने अपराध करके घूसे खाए और धीरज धरा, तो इस में क्या बड़ाई की बात है ? पर यदि भला काम करके दुख उठाते हो और धीरज धरते हो,

तो यह परमेश्वर को भाता है। और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो।" क्योंकि "न तो उसने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आप को सच्चे न्यायी (अर्थात् परमेश्वर) के हाथ में सौंपता था।" और, "वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिस से हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं।" (१ पतरस २:१६-२४)।

सो हम देखते हैं, कि यीशु मसीह स्वयं अपने किसी अपराध के कारण क्रूस के ऊपर नहीं चढ़ाया गया था। परंतु वह जगत के सारे लोगों के पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ा था। वह मनुष्यों की शक्ति से नहीं परंतु परमेश्वर की इच्छा से क्रूस पर चढ़ाया गया था। इसीलिये बाइबल में हम पढ़ते हैं, कि क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले जब यीशु पर झूठे आरोप लगाए जा रहे थे तो वह चुप करके उन सबको सुनता रहा। और यहां तक कि हाकिम पीलातुस को यह देखकर बड़ा ही आश्चर्य हुआ था और उसने यीशु से का था, कि तू अपने पक्ष में कुछ क्यों नहीं बोलता ! और जब यीशु ने पीलातुस की इस बात का भी उत्तर नहीं दिया, तो उसने यीशु से कहा, कि, "क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का अधिकार मुझे है और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है।" इस बात के उत्तर में यीशु ने पीलातुस से कहा था, "कि यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता।" (यूहन्ना १६:१०,११)। यीशु परमेश्वर का पुत्र था। यदि वह चाहता तो मृत्यु को देखे बिना ही वह स्वर्ग में प्रवेश कर लेता; जिस तरह से वह अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया था, उसी प्रकार वह अपनी मृत्यु से पहले भी स्वर्ग पर उठाया जा सकता था। परंतु उस ने मृत्यु को चुन लिया। क्योंकि उसके बारे में यही परमेश्वर की इच्छा थी। केवल इसी एक काम को करने के लिये परमेश्वर ने अपने उस सामर्थी वचन को मनुष्य बनाकर प्रभु यीशु मसीह के रुप में पृथ्वी पर भेजा था। इसीलिये बाइबल में इस प्रकार लिखा है, कि, "पुत्र होने पर भी उसने दुख उठा-उठाकर आज्ञा माननी सीखी" और इस

प्रकार, "सिद्ध बनकर अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिये सदाकाल के उद्धार का कारण हो गया" (इब्रानियों ५:८,९)।

यह वह खुशखबरी या वह सुसमाचार है जिसे हमारा परमेश्वर हम सब को देना चाहता है। यह बाइबल का मुख्य संदेश है। प्रभु यीशु मसीह नें अपन अनुयायियों को आज्ञा देकर कहा था, कि तुम जाकर पृथ्वी पर सब लोगों को इस सुसमाचार का संदेश दो और जो भी मनुष्य इस सुसमाचार में विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा वह अपने पापों से उद्धार पाएगा। (मरकुस १६:१५,१६)। परंतु परमेश्वर के अद्‌भुत प्रेम, और महान् सुसमाचार और उसके साधारण उद्धार का बहुतेरे लोग गलत अनुमान लगा लेते हैं। परमेश्वर प्रेम है, अर्थात् वह सब मनुष्यों से प्रेम रखता है, और वह नहीं चाहता कि एक भी आत्मा पाप के कारण नाश हो। इसीलिये उसने हम सब का उद्धार करने के लिये ऐसा बड़ा और महान् बलिदान दिया था, कि उसने उस पवित्र तथा पाप-रहित यीशु को, जो उसी का पुत्र था, जगत के पापों का प्रायश्चित बनाकर कुर्बान कर दिया। परंतु इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि अब हम चाहे जैसा भी जीवन व्यतीत करें और परमेश्वर हमारे सब पापों को यीशु की मृत्यु के कारण क्षमा कर देगा। पर बाइबल कहती है, कि यीशु मसीह हमारे पापों के बदले में क्रूस के ऊपर इसलिये मरा था ताकि हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन व्यतीत करें। जब तक मनुष्य पाप करना छोड़कर परमेश्वर की आज्ञानुसार चलना आरम्भ नहीं करता, वह उद्धार पाने की आशा नहीं रख सकता। पाप के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन व्यतीत करने का अर्थ यही है। परमेश्वर मनुष्य को "पाप से" बचाता है परंतु वह मनुष्य को "पाप के भीतर" नहीं बचा सकता। क्योंकि यह उसके स्वभाव के विरुद्ध है। वह सच्चा न्यायी है, और इस कारण वह धर्मी तथा अधर्मी दोनों को एक सा प्रतिफल नहीं दे सकता। वह अत्यन्त पवित्र है, और इस कारण वह किसी भी पापी के साथ संगति नहीं रख सकता। सो उसके पास आने के लिये, उसकी संगति में आने के लिये, और उसकी संतान बनने के लिये प्रत्येक मनुष्य को पाप से छुटकारा पाकर पवित्र बनने की आवश्यकता है परंतु यह काम कैसे हो सकता है ?

कुछ लोग अपने पापों से छुटकारा पाने के लिये तीर्थ-यात्राएं करते हैं और दान-पुन के काम करते हैं। कुछ अन्य लोग देवी देवताओं को पूजते हैं और उनके आगे फल-फूल और मेवे चढ़ाते हैं, और रोज़े रखते हैं। परंतु ये सब काम मनुष्य को पाप से मुक्ति नहीं दे सकते। पाप से छुटकारा पाने का सब मनुष्यों के लिये परमेश्वर का केवल एक ही मार्ग है-और वह है प्रभु यीशु मसीह। क्योंकि केवल उसी को परमेश्वर ने सारे जगत के पापों का प्रायश्चित ठहराया है। केवल वही सारे जगत के पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ा था। और केवल वही एक ऐसा जन था जो न केवल सब के बदले में मर गया, परंतु वह मरने के बाद फिर जी भी उठा था, और उसे स्वर्ग पर वापस उठा लिया गया था। और इस प्रकार उसने यह प्रमाणित किया था कि यद्यपि वह पृथ्वी पर मनुष्यों की ही तरह था और मनुष्यों की ही तरह वह मरा भी था परंतु तौभी वास्तव में वह मनुष्य नहीं परंतु ईश्वर था; जो पृथ्वी पर मनुष्य का पाप से उद्धार करने के लिये आया था। इसीलिये उसने लोगों से कहा था, कि मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूं और कोई भी मनुष्य परमेश्वर के पास बिना मेरे द्वारा नहीं पहुंच सकता। (यूहन्ना १४:६)। और यीशु के द्वारा परमेश्वर के पास पहुंचने का केवल एक ही उपाय है - अर्थात् उसमें सारे मन से विश्वास करना और उसकी आज्ञा को मानना। यीशु ने कहा था, जैसे कि हम बाइबल में मरकुस १६:१६ में पढ़ते हैं, कि जो मनुष्य विश्वास करेगा और विश्वास करके बपतिस्मा लेगा उसी मनुष्य का पाप से उद्धार होगा।

विश्वास के द्वारा हम प्रभु यीशु मसीह के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को स्वीकार करते हैं और यह मानते हैं कि वह परमेश्वर का पुत्र है। और बपतिस्मा लेकर हम पाप के लिये मरकर के धार्मिकता के लिये जीवन व्यतीत करने का निश्चय करके एक नया जीवन आरम्भ करने की प्रतिज्ञा करते हैं। क्योंकि बपतिस्मे के द्वारा मनुष्य पानी में इस तरह से दफ़ना दिया जाता है जैसे किसी मरे हुए इंसान को कब्र के भीतर गाड़ दिया जाता हैं। पर फिर वह मनुष्य पानी की उस कब्र में से बाहर निकाला जाता हैं, जिस प्रकार से प्रभु यीशु जीवित होकर कब्र में से बाहर आ गया था। यह वह अवसर होता है जबकि मनुष्य का नया जन्म

होता है; वह एक नए जीवन को, प्रभु की आज्ञा मानकर, आरम्भ करता है। वह पाप के लिये मर जाता है, और उसका पापी जीवन, दृष्टांत की रीति पर, बपतिस्मे के द्वारा पानी की कब्र के भीतर दफन हो जाता है; और उस पानी में से बाहर आकर उसे फिर से एक नई ज़िन्दगी मिल जाती है।

इसीलिये बाइबल में लिखा है, "सो जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो - पृथ्वी पर की नहीं परंतु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ, क्योंकि तुम तो मर गए और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है- इसलिये अपने उन अंगों को मार डालो जो पृथ्वी पर हैं। (कुलुस्सियों ३:१-५)। मित्रो, स्वर्ग में प्रवेश करना किसी भवन में एक बड़े द्वार से होकर प्रवेश करने जैसा नहीं है। परंतु प्रभु यीशु ने कहा था, कि स्वर्ग में बहुतेरे लोग प्रवेश करना तो चाहेंगे परंतु उसके भीतर न जा सकेंगे, क्योंकि स्वर्ग का द्वारा बड़ा ही सकरा है। (लूका १३:२४)। केवल प्रभु यीशु में विश्वास करके तथा बपतिस्मा लेकर कोई स्वर्ग में नहीं पहुंच सकता। परंतु नए जीवन का आरम्भ करके और नए जीवन की चाल चलकर ही मनुष्य स्वर्ग में प्रवेश कर सकता है। और केवल यही पर्याप्त नहीं है कि हम मसीह यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता बना लें। परंतु जब तक हम उसके जीवन का अनुसरण करने का प्रयत्न नहीं करते और उसकी आज्ञाओं को नहीं मानते, हम उसके स्वर्ग में प्रवेश करने की आशा नहीं रख सकते। उसके शब्द ये थे, कि जो मुझ से हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा, परंतु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। स्वर्ग के भीतर प्रवेश करेगा। (मत्ती ७:२१)।

सो मेरी आशा है कि आप सारी गम्भीरता के साथ इन बातों के ऊपर विचार करेंगे। और यदि इन बातों के संबंध में आप कुछ और जानना चाहते हैं या आप कुछ कहना चाहते हैं तो आप मुझे लिख सकते है।

जो परमेश्वर की आज्ञा मानता है

सत्य सुसमाचार के इस कार्यक्रम में हम लोगों को परमेश्वर के उस महान अनुग्रह के बारे में बताते हैं जिसे उसने मसीह में होकर सारे जगत पर प्रकट किया है। आज जगत में मनुष्य को यदि किसी भी वस्तु की सबसे अधिक आवश्यकता है, तो वह वस्तु है पाप से उद्धार, या पाप से मुक्ति। मनुष्य स्वीकार करे या न करे, परंतु यह एक वास्तविकता है कि वह पापी है और उसे अपने पापों से मुक्ति पाने की आवश्यकता है। मनुष्य चाहे यह माने या न माने, लेकिन यह एक सच्चाई है कि वह पृथ्वी पर केवल थोड़े ही दिनों के लिये है, और उसे एक दिन अवश्य ही इस संसार से जाना है। इसलिये मनुष्य को चाहिये कि वह उस यात्रा पर निकलने के लिये तैयारी कर ले, जो उस की अंतिम यात्रा है, और जहां पहुंचकर वह हमेशा के लिये रहेगा। फिर, मनुष्य चाहे इस बात को ग्रहण करे या न करे, परंतु इसमें कोई संदेह नहीं, कि परमेश्वर जो पवित्र है वह पाप के भीतर नहीं रह सकता, वह अधर्मियों की संगति में नहीं रह सकता, और इसलिये कोई भी पापी मनुष्य उस के साथ सदा रहने के लिये उसके स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता, इस कारण मनुष्य को पाप से उद्धार पाने की आवश्यकता है। उसे एक पापी से पवित्र, और एक अधर्मी से धर्मी बनने की आवश्यकता है। मनुष्य सारे जगत की वस्तुओं को प्राप्त कर सकता है, परंतु जगत की कोई भी वस्तु ऐसी पवित्र तथा महान नहीं है जिसके द्वारा मनुष्य का उद्धार हो सकता है। मनुष्य का उद्धार केवल परमेश्वर के अनुग्रह से ही हो सकता है।

पवित्र बाइबल में लिखा है, "परमेश्वर का अनुग्रह तो सब मनुष्यों के उद्धार के लिये प्रकट हुआ है" और, "वह हमें यह सिखाता है, कि हम अभक्ति

और सांसारिक अभिलाषाओं का इंकार करके इस युग में संयम, धार्मिकता और भक्ति से जीवन बिताएं। ओर उस धन्य आशा की, अर्थात् अपने महान परमेश्वर यीशु मसीह उद्धारकर्त्ता की महिमा के प्रकट होने की, प्रतीक्षा करते रहें। जिसने अपने आपको हमारे लिये दे दिया कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले और हमें शुद्ध करके अपने लिये एक ऐसी निज प्रजा बना ले जो भले कार्य करने के लिये सरगर्म हो।" (तीतुस २:११-१४)।

परमेश्वर नहीं चाहता कि कोई भी मनुष्य अपने पाप के कारण नाश हो। वह नहीं चाहता कि कोई भी इंसान अपने अधर्म के कारण सदा के लिये उस से दूर होकर नरक में रहे। परंतु वह यह चाहता है कि सब लोग अपने पापों से छुटकारा पाकर उसके साथ अपना मेल कर लें, और न केवल इस जीवन में परंतु आनेवाले अनन्त जीवन में भी सदा उसके साथ रहें। इसीलिये उसने प्रभु यीशु मसीह में अपने उस अनुग्रह को सारे जगत पर प्रकट किया है जो सब मनुष्यों के लिये उद्धार का कारण है। परमेश्वर का पुत्र यीशु सारे जगत का उद्धार करने के लिये क्रूस के ऊपर मर गया था। उस ने अपने आप को दे दिया था, कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले। उसकी मृत्यु केवल एक मृत्यु नहीं, परंतु वह एक महान् बलिदान था। वह परमेश्वर की इच्छा से और उसकी मर्ज़ी को पूरा करने के लिये क्रूस के ऊपर मरा था। उसकी मृत्यु के द्वारा परमेश्वर ने सारे जगत के पापों का प्रायश्चित किया था। बाइबल में यीशु मसीह को परमेश्वर का वह मेम्ना कहकर संबोधित किया गया है जो जगत के पापों को उठा ले जाता है। (यूहन्ना १:२६)। वह परमेश्वर के लेखे में प्रत्येक मनुष्य के पाप का प्रायश्चित है। उसकें भीतर आकर कोई भी मनुष्य अपने पापों से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। वह इसलिये मरा था ताकि वह हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले और हमें प्रत्येक पाप से शुद्ध करके अपने लिये एक विशेष लोगों की मण्डली बना ले।

क्रूस के ऊपर अपने आप को बलिदान करके यीशु ने परमेश्वर की इच्छा को पूर्ण किया था, वह एक मनुष्य की नाईं, मनुष्यों को बचाने के लिये मारा गया था। परंतु वह कोई मात्र मनुष्य नहीं था। वह मनुष्यों को बचाने के लिये एक मनुष्य बनकर स्वर्ग से पृथ्वी पर आया था, परंतु वह वास्तव में परमेश्वर का

पुत्र था। वह परमेश्वर के साथ था, और परमेश्वर था। (फिलिप्पियों २:६-८)। इस कारण, बाइबल में लिखा है, कि उसके लिये मृत्यु के वश में रहना एक असम्भव बात थी। (प्रेरितों २:२३,२४)। सो वह परमेश्वर की सामर्थ से फिर से जीवित हो गया था, और जिस प्रकार वह स्वर्ग से आया था वह फिर से स्वर्ग पर वापस उठा लिया गया था। जब वह स्वर्ग पर वापस जा रहा था तो यीशु ने अपने चेलों को आज्ञा देकर कहा था, कि तुम जाकर सब "लोगों को चेले बनाओ तथा उन्हें पिता, और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो और "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले वह उद्धार पाएगा, परंतु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मत्ती २८:१९; मरकुस १६:१६)।

सो परमेश्वर के पुत्र, प्रभु यीशु मसीह की आज्ञा यह है कि उद्धार पाने के लिये प्रत्येक मनुष्य उसमें विश्वास लाए और बपतिस्मा ले। प्रभु यीशु मसीह में विश्वास लाने का अर्थ है उसके भीतर अपने सारे मन से विश्वास लाना। बाइबल में एक जगह हम एक मनुष्य के बारें में पढ़ते हैं, जब उसने यीशु के उद्धार का सुसमाचार सुना था, तो उसने सुसमाचार सुनानेवाले से कहा था कि, देख, यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है ; तब प्रचारक ने उस से कहा था, कि यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो ले सकता है (प्रेरितों ८:३५-३६)। प्रभु यीशु मसीह में सारे मन से विश्वास करना बड़ा ही आवश्यक है। और यदि कोई उसमें सारे मन से विश्वास करेगा तो वह निश्चय ही उसकी सभी आज्ञाओं को भी मानेगा। वह मनुष्य, जिसके विषय में अभी हमने बाइबल में से देखा है, सचमुच में यीशु में अपने सारे मन से विश्वास करता था। क्योंकि उस मनुष्य ने यीशु के सुसमाचार को केवल एक ही बार सुना था और उसको इस बात का पूरा विश्वास हो गया था कि यीशु वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है; वह सचमुच में मेरे पापों के बदले में क्रूस के ऊपर मरा था। और उस मनुष्य का विश्वास इस बात से स्पष्ट है कि उसने कहा था, कि अभी बपतिस्मा लेने में मेरे लिये क्या रुकावट है? वह वास्तव में अपने सारे मन से यीशु में विश्वास करता था। वह उसी समय बपतिस्मा लेना चाहता था क्योंकि वह जानता था कि यह प्रभु की आज्ञा है; और प्रभु ने इस आज्ञा को उद्धार पाने के लिये दिया है।

उसे अपनी आत्मा को बचाने की चिन्ता थी; उसे पाप से छुटकारा पाने की जल्दी थी।

बाइबल से हम सीखते हैं, कि बपतिस्मा लेने के द्वारा हम प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार को मानते हैं, या उसका पालन करते हैं। प्रभु यीशु का सुसमाचार यह है, कि वह हमारे पापों के लिये मर गया था और गाड़ा गया था और फिर से जी उठा था। (१ कुरिन्थियों १५:१-४)। और इसी सुसमाचार का पालन हम बपतिस्मा लेकर करते है।

यीशु में विश्वास लाकर हम अपने पुराने जीवन को छोड़कर एक नए जीवन को आरम्भ करना चाहते हैं। हम अपने पापों से मन फिराते हैं, अर्थात् अपने पुराने जीवन के लिये मर जाते हैं। और फिर एक मरे हुए मनुष्य की नाईं पानी के बीच में इस प्रकार गाड़े जाते हैं जैसे कि एक मुर्दे को कब्र के भीतर गाड़ा जाता है। और तब हम पानी में से बाहर निकाले जाते हैं जैसे कि मसीह को परमेश्वर ने कब्र में से जिलाया था। इसी बात को बड़े ही खूबसूरत शब्दों में बाइबल इस प्रकार कहती है: "क्या तुम नहीं जानते कि हम सब जो बपतिस्मा के द्वारा मसीह के साथ एक हुए, बपतिस्मा द्वारा उसकी मृत्यु मे भी सहभागी हुए ? इसलिये हम बपतिस्मा द्वारा उस की मृत्यु में सहभागी होकर उसके साथ गाड़े गए हैं, जिस से कि पिता की महिमा के द्वारा जैसे मसीह जिलाया गया था, वैसे ही हम भी जीवन की नई चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसके साथ उसकी मृत्यु की समानता में एक हो गए हैं, तो निश्चय ही उसके जी उठने की समानता में भी एक हो जाएंगे, यह जानते हुए कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, कि हमारा पाप का शरीर निष्क्रिय हो जाए, कि हम आगे को पाप के दास न रहें।" (रोमियों ६:३-६)।

पाप मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। बाइबल में हम एक और मनुष्य के बारे में पढ़ते हैं, उसका नाम लाजर था। वह ऐसा रोगी था, कि लिखा है, कि उसका सारा शरीर घावों से भरा हुआ था। वह चल-फिर नहीं सकता था। कुत्ते आकर उसके घावों को चाटते थे। वह बिल्कुल निर्धन और कंगाल था, उसके पास कुछ भी नहीं था। परंतु जब उसकी मृत्यु हुई, तो प्रभु यीशु ने कहा था कि

लाजर स्वर्गलोक में गया है। अर्थात्, पृथ्वी पर ऐसा कोई रोग नहीं है जो मनुष्य को स्वर्ग में जाने से रोक सकता है। निर्बल, अशिक्षित, निर्धन और कंगाल होने पर भी मनुष्य स्वर्ग में जा सकता है। परंतु यदि मनुष्य के जीवन में पाप है तो वह कदापि परमेश्वर के पवित्र स्वर्ग में प्रवेश न करेगा।

मित्रो, बाइबल में लिखा है, कि पृथ्वी पर सब मनुष्यों ने पाप किया है, और सब को पाप से मुक्ति पाने की आवश्यकता है प्रभु यीशु, परमेश्वर का पुत्र, सारे जगत का उद्धार करने को पृथ्वी पर आया था। उसने सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिये अपना बलिदान दिया था। (रोमियों ३:२३-२६)। और यह आज्ञा उसने सब के लिये दी है कि "जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा।" बाइबल में यीशु मसीह के बारे में लिखा है, कि, "पुत्र होने पर भी उसने दुख सह-सह कर आज्ञा पालन करना सीखा" और इस तरह, "वह सिद्ध ठहराया जाकर उन सबके लिये जो उसकी आज्ञा पालन करते हैं अनन्त उद्धार का स्त्रोत बन गया।" (इब्रानियों ५:८,९)।

कोई भी जन जो उद्धार पाना चाहता है, जो परमेश्वर के साथ अपना मेल करना चाहता है, उसे चाहिए कि वह प्रभु यीशु मसीह के पास आए, उसमें विश्वास लाए और उसकी आज्ञा को माने, क्योंकि प्रभु यीशु ने कहा था, कि "मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूं। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना १४:६)। उद्धार पाने का और कोई मार्ग नहीं है, और कोई उपाय नहीं है। हम सब का केवल एक ही परमेश्वर है, और उस एक परमेश्वर ने हम सब को उद्धार पाने का केवल एक ही मार्ग बताया है। और वह मार्ग है परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह। क्या आप उसे अपना उद्धारकर्त्ता ग्रहण करते हैं ? क्या आप उसकी आज्ञाओं को मानकर उसके पीछे चल रहे हैं? आज आप के पास सुंदर अवसर है। अभी उस में विश्वास लाएं, और मन में इस बात का निश्चय करें कि अब आप पाप में जीवन नहीं बिताएंगे। हमें लिखकर सूचित करें कि आप अपने सब पापों की क्षमा पाने के लिये यीशु मसीह की आज्ञा मानकर बपतिस्मा लेना चाहते हैं। प्रभु उचित निश्चय करने के लिये आपको सुबुद्धि दे।

जिसका नया जन्म हुआ है

आज मैं आप का ध्यान इस विशेष बात के ऊपर दिलाना चाहता हूं, कि प्रभु यीशु मसीह ने कहा है, कि यदि कोई मनुष्य नए सिरे से न जन्मे तो वह परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। (यूहन्ना ३:३)। प्रत्येक मनुष्य की इच्छा यह है कि वह स्वर्ग में प्रवेश करे। कोई भी मनुष्य नरक में जाना नहीं चाहता। परंतु हम इस बात पर ध्यान नहीं देते, कि एक पापी स्वर्ग में किस प्रकार जा सकता है ? स्वर्ग परमेश्वर का राज्य है; वह एक ऐसी वास्तविकता है जहां पाप किसी भी रुप में प्रवेश नहीं कर सकता। स्वर्ग वह स्थान है जहां पवित्र परमेश्वर रहता है; और जिसमें परमेश्वर के स्वर्गदूत रहते हैं। बाइबल कहती है, कि वहां परमेश्वर अपने लोगों के साथ रहेगा। वे लोग वहां उसके संतान होंगे और वह उनका पिता होगा। वहां मृत्यु भी नहीं होगी, और वे लोग परमेश्वर के साथ उसके स्वर्ग में अनन्तकाल यानि हमेशा के लिये होंगे। (प्रकाशितवाक्य २१:२,३)। परंतु वे किस प्रकार के लोग होंगे ? प्रत्यक्ष ही है, कि जो लोग परमेश्वर के स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेंगे वे उसी के समान पवित्र होंगे। क्योंकि परमेश्वर की बाइबल में लिखा है कि उस में कोई अपवित्र वस्तु या घृणित काम करनेवाला, या झूठ का गढ़नेवाला, किसी रीति से प्रवेश नहीं करेगा। (प्रकाशितवाक्य २१:२७)। परंतु यदि सब मनुष्य पापी हैं तो फिर कौन स्वर्ग में प्रवेश करेगा ? बाइबल में लिखा है, कि सब के सब पाप के वश में हैं, और सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं अर्थात् उसके स्वर्ग में जाने के योग्य नहीं है। अब इस सच्चाई से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि यदि मनुष्य स्वर्ग में नहीं जाएगा तो वह नरक में जाएगा। यह सच है, कि उस भयानक स्थान में कोई नहीं जाना चाहता, लेकिन फिर भी, मनुष्य

वहां जाएगा। क्योंकि मृत्यु के द्वारा वर्तमान देह से अलग होकर मनुष्य को कहीं न कहीं तो रहना ही है।

हमें यह समझना बड़ा ही जरुरी है कि मनुष्य का अस्तित्व पशुओं के समान नहीं है। पशुओं में जीवन तो है, परंतु आत्मा नहीं है। मनुष्य का अस्तित्व जगत की अन्य वस्तुओं के समान नहीं है जो नाश होकर मिट जाती हैं। परंतु मनुष्य को परमेश्वर ने अपने आत्मिक तथा अनन्त स्वरुप पर बनाया है। यह सच है कि मनुष्य के भौतिक शरीर को अनेक प्रकार से नाश किया जा सकता है, परंतु पृथ्वी पर का सारा गोला-बारुद मिलकर भी मनुष्य की आत्मा को नाश नहीं कर सकता, अर्थात् उसके अस्तित्व को नहीं मिटा सकता। मृत्यु के बाद, देह से अलग होकर मनुष्य को कहीं रहना है। और अनन्तकाल में केवल दो ही स्थान हैं, अर्थात् यदि मनुष्य स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेगा, तो अवश्य ही नरक में प्रवेश करेगा, क्योंकि इसके अतिरिक्त अनन्तकाल में और कोई तीसरा स्थान नहीं है।

परंतु प्रभु यीशु का कहना है, कि यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो वह परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता है। और निश्चय ही यदि नए सिरे से जन्मे बिना मनुष्य परमेश्वर के राज्य को देख नहीं सकता तो प्रकट ही है कि वह उसमें प्रवेश भी नहीं कर सकता। परंतु यदि सब मनुष्य पापी हैं तो फिर परमेश्वर के राज्य में कौन प्रवेश कर पाएगा ? और यदि उसके स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाने के लिये नए सिरे से जन्म लेना आवश्यक है, तो फिर मनुष्य किस तरह से नए सिरे से जन्म ले सकता है ?

एक बार प्रभु यीशु ने एक धनवान आदमी से कहा था, कि यदि तू अनन्त जीवन पाना चाहता है, तो अपना सब कुछ छोड़कर मेरे पीछे हो ले। वह मनुष्य यह बात सुनकर बड़ा ही उदास हुआ, क्योंकि वह बहुत अधिक धनी था। जब वह यीशु के पास से चला गया, तो प्रभु ने अपने चेलों से कहा, कि धनवानों का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है। क्योंकि जो धन पर भरोसा रखते हैं वे परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते। और यीशु ने जब यह कहा, कि परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके

में से निकल जाना सहज है, तो यह सुनकर चेले बड़े ही चकित हुए, और आपस में कहने लगे कि यदि यह बात सच है तो फिर किस का उद्धार हो सकता है ? क्योंकि पृथ्वी पर सभी लोग किसी न किसी वस्तु पर भरोसा रखते हैं। प्रभु यीशु ने वहां एक बड़ी ही गम्भीर बात कही थी, यीशु ने कहा था, कि "मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परंतु परमेश्वर से हो सकता है; क्योंकि परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।" (मरकुस १०:२७)।

मनुष्य स्वंय अपने प्रयत्नों से उद्धार नहीं पा सकता। वह स्वयं इतने अच्छे काम नहीं कर सकता कि एक पापी से पवित्र बन जाए। वह अपने मार्ग पर चलकर अपने आप को नया नहीं बना सकता। केवल परमेश्वर ही उसे एक नया इंसान बना सकता है। केवल परमेश्वर ही मनुष्य को स्वर्ग में जाने के योग्य बना सकता है। सो यह कहने के बाद, कि यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता, यीशु ने आगे इस प्रकार कहा था कि, "जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। क्योंक जो शरीर से जन्मा है वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है।" (यूहन्ना ३:५,६)। सो प्रभु यीशु ने न केवल इस बात को ही स्पष्ट करके बताया कि नया जन्म एक आत्मिक जन्म है, परंतु प्रभु ने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि नया जन्म किस तरह से प्राप्त किया जा सकता है। प्रभु ने कहा, कि जब तक कोई जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। अर्थात् नए सिरे से जन्म लेने के लिये प्रत्येक मनुष्य को जल और आत्मा से जन्म लेना आवश्यक है। अब इसका अर्थ क्या है ?

सबसे पहले तो यहां यह समझ लेना आवश्यक है कि मनुष्य को नया बनाने के लिये, अर्थात् इंसान को पापी से पवित्र तथा अधर्मी से धर्मी बनाने के लिये परमेश्वर ने अपने ही वचन को देहधारी बनाकर यीशु मसीह के रुप में पृथ्वी पर भेजा था। परमेश्वर के पुत्र यीशु ने पृथ्वी पर एक पवित्र तथा धर्मी जीवन व्यतीत किया था। उसका जीवन एक सिद्ध जीवन था। उसमें कोई बुराई नहीं थी। अपनी मृत्यु से पहिले, अपने जीवन के द्वारा यीशु सब इंसानों के लिये

एक आदर्श रखना चाहता था ताकि उसकी मृत्यु के बाद नया जीवन प्राप्त करके मनुष्य उसके पवित्र जीवन के आदर्श पर चल सके। सो जब यीशु ने यह काम पूरा कर लिया तो परमेश्वर ने अपनी मर्ज़ी को पूरा करने के लिये यह होने दिया कि यीशु एक क्रूस के ऊपर चढ़ाया जाए। और मारा जाए यीशु की मृत्यु के द्वारा, बाइबल कहती है, परमेश्वर ने सब लोगों के पापों का प्रायश्चित किया था। "जब हम पापी ही थे", बाइबल कहती है, "तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों ५:८)। और "जो पाप से अज्ञात था उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।" (२ कुरिन्थियों ५:२१)।

प्रभु यीशु की मृत्यु के बाद, बाइबल हमें बताती है, उसकी लाश को एक कब्र के भीतर गाड़ा गया था। परंतु, जैसा कि यीशु ने अपनी मृत्यु से पूर्व घोषित किया था, वह तीसरे दिन फिर जी उठा था। चालीस दिन तक वह फिर पृथ्वी पर रहा, परंतु बाद में वह स्वर्ग पर उठा लिया गया। अब स्वर्ग पर जाने से पहिले यीशु ने अपने चेलों से इस प्रकार कहा था, "तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।" और "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परंतु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मत्ती २८:१९; मरकुस १६:१६)। उन्हीं चेलों से प्रभु ने यह भी प्रतिज्ञा की थी कि वे पवित्रात्मा की सामर्थ पाएंगे और वह आत्मा उनको सिखाएगा और प्रत्येक बात में उनकी अगुवाई करेगा। (यूहन्ना १४:२६; १६:१३; प्रेरितों १:४,५; २:१-४)। बाद में उन लोगों ने पवित्रात्मा की प्रेरणा पाकर न केवल यीशु के उद्धार के सुसमाचार का प्रचार किया था परंतु हमारे लिये परमेश्वर की सम्पूर्ण इच्छा को बाइबल के नए नियम में लिखकर हमें दिया है। बाइबल में, इसलिये, लिखा है कि "कोई भी भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।" (२ पतरस १:२१)। अर्थात् परमेश्वर की पुस्तक बाइबल में जो कुछ भी लिखा हुआ है वह सब मनुष्य की इच्छा से नहीं परंतु पवित्र आत्मा की प्रेरणा से लिखा गया है।

सो इन बातों को ध्यान में रखकर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं, कि जल और आत्मा से नया जन्म प्राप्त करने का अर्थ है, प्रभु यीशु मसीह में विश्वास लाकर जल के भीतर बपतिस्मा लेना, अर्थात् यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने, तथा उसके जी उठने की समानता को पहिनने के लिये बपतिस्मे के द्वारा जल के भीतर गाड़े गाना और उसमें से बाहर आना। और फिर आत्मा की प्रेरणा से लिखे गए परमेश्वर के वचन के अनुसार चलना। पवित्र बाइबल में लिखा है कि, "सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं।" (रोमियों ८:१)।

सो मैं आपके सामने यह प्रश्न रखना चाहता हूं : कि क्या आपने नए सिरे से जन्म ले लिया है, अर्थात् क्या आप ने जल और आत्मा से जन्म प्राप्त कर लिया है ? आप को ऐसा करने की आवश्यकता है। नया जन्म प्राप्त करना आपके लिये और हर एक इंसान के लिये बड़ा ही जरुरी है। क्योंकि प्रभु यीशु ने यह कहा था, कि यदि कोई नए सिरे से न जन्मे, और जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।

जिसके पास अनन्त जीवन है

एक बार फिर से हमारे पास यह अवसर है कि हम अपने मनों को प्रभु यीशु मसीह की ओर लगाएं। यह बड़ा ही आवश्यक है कि पृथ्वी पर हर एक मनुष्य यीशु मसीह के बारे में जाने और उसके विषय में अपना व्यक्तिगत निश्चय करे। क्योंकि बाइबल में लिखा है, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है और वह जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस पर बलिदान हुआ था, और यदि मनुष्य उसमें विश्वास लाकर उसकी आज्ञाओं को नहीं मानेगा तो वह अपने पाप में ही नाश हो जाएगा। फिर, यीशु ने स्वंय भी यह कहा था, कि मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं, बिना मेरे पास आए कोई मनुष्य परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकता। फिर हम उसके उन चेलों के बारे में भी पढ़ते हैं, जिन्हें यीशु ने अपनी मृत्यु तथा जी उठने का सुसमाचार प्रचार करने को सारे जगत में भेजा था, कि उन्होंने उसके सुसमाचार की गवाही के कारण अपने प्राणों को भी प्रिय न जाना था, और यहां तक उन्होंने कहा था कि "जिस के पास पुत्र है, उसके पास जीवन है ; और जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं उसके पास जीवन भी नहीं है।" (१ यूहन्ना ५:१२)।

सांसारिक तथा ऐतिहासिक दृष्टिकोण से आज हम यीशु को लोगों के मनों में राज्य करते देखते हैं। कोई ऐसा देश नहीं है जहां उसमें विश्वास करनेवाले नहीं पाए जाते। कोई ऐसी जाति या सभ्यता पृथ्वी पर नहीं है जिसमें मसीह में विश्वास करनेवाले लोग न हों। और वास्तव में बात तो यह है, कि यद्यपि पृथ्वी पर आज नाना प्रकार के धर्म तथा विश्वास तो अनेक हैं, लेकिन फिर भी सबसे अधिक संख्या उन लोगों की है जो यह विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र और जगत का उद्धारकर्त्ता है। पृथ्वी पर कोई ऐसा जीवन

नहीं है जो प्रभु यीशु मसीह के प्रभाव से रहित रहा हो। पृथ्वी पर लगभग सभी देशों की सरकारें रविवार को छुट्टी का दिन मानती हैं। क्योंकि बाइबल हमें बताती है कि इस दिन यीशु मसीह मुर्दों में से जी उठा था और उसके अनुयायी इस दिन उसकी आराधना करने के लिये एकत्रित होते हैं। (मरकुस १६:१-६; प्रेरितों २०:७)। पृथ्वी पर सारे लोग समय का हिसाब ईसवी पूर्व या ईसवी सन कहकर लगाते हैं, अर्थात् यीशु के जन्म से पूर्व और यीशु के जन्म के बाद। आज हम ईसवी सन १९९१ में रहते हैं, यानि आज से लगभग १९९१ वर्ष पूर्व यीशु मसीह का जन्म हुआ था। न केवल निर्धन और कंगाल ही यीशु में विश्वास करते हैं, परंतु बड़े-बड़े राजा और रानी और राष्ट्रपति भी उसके सामने घुटने टेकते हैं और झुकते हैं। इसलिये नहीं कि पृथ्वी पर वह कोई बड़ा शक्तिशाली राजा था; या वह बहुत अधिक धनी था या वह बहुत अधिक पढ़ा-लिखा मनुष्य था। किन्तु पृथ्वी के दृष्टिकोण से तो वह निर्बल और निर्धन और अनपढ़ था। परंतु, यद्यपि उसने पृथ्वी पर अपने लिये कभी कोई सेना नहीं बनाई थी तौभी उसके आत्मिक राज्य में आज उसके इतने अधिक सिपाही हैं जिनकी गिनती को संसार की सारी सेनाएं मिलकर भी पार नहीं कर सकती। और यद्यपि उसने कभी कोई पुस्तक नहीं लिखी थी, परंतु तौभी उसके बारे में जितनी पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं उनकी संख्या इतनी बड़ी है कि पृथ्वी पर का अन्य सभी साहित्य यदि एकत्रित भी कर लिया जाए तौभी वह यीशु के संबंध में लिखे गए साहित्य की गिनती को पार नहीं कर सकता। और यद्यपि वह स्वयं निर्धन था, लेकिन तौभी उसने अनेको को धनी बना दिया है!

बाइबल में उसके बारे में लिखा है, "कि वह धनी होकर भी तुम्हारे लिये कंगाल बन गया ताकि उसके कंगाल होने से तुम धनी हो जाओ।" (२ कुरिन्थियों ८:९)। उसने मनुष्य को बचाने के लिये स्वर्ग को छोड़ दिया था। वह स्वर्गीय महिमा तथा आनन्द को त्यागकर पृथ्वी पर आ गया। उसने एक गौशाले में जन्म लिया और एक निर्धन परिवार में रहकर परवरिश पाई। जब वह बड़ा हुआ तो उसने अपने लिये कोई बड़ाई या मान-सम्मान नहीं चाहा, जैसी कि पृथ्वी पर लोग इच्छा करते हैं, परंतु उसने सब जगह जा-जाकर उन बातों की

शिक्षा दी और प्रचार किया जिन्हें सिखाने के लिये वह स्वर्ग से पृथ्वी पर मनुष्यों के बीच में आया था और, फिर जब उसने अपने प्रचार के काम को पूर्ण कर लिया, तो अपने आप को उसने उन लोगों के हवाले कर दिया जो उसे क्रूस पर चढ़ाकर इसलिये मरवा डालना चाहते थे क्योंकि वे उसकी खरी शिक्षा के कारण उस से बैर रखते थे।

किन्तु वे लोग इस बात से अनजान थे कि यीशु को क्रूस पर चढ़ाकर वे वास्तव में परमेश्वर की एक बहुत बड़ी योजना को सफल कर रहे थे और परमेश्वर अपनी इच्छा को पूरा करने के लिये उन लोगों को इस प्रकार इस्तेमाल कर रहा था। इस घटना से बहुत समय पहिले ही यीशु ने स्वयं इस बात की घोषणा करके कहा था कि, "जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचे पर चढ़ाया था, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊंचे पर चढ़ाया जाए। ताकि जो कोई विश्वास करे उसमें अनन्त जीवन पाए। क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परंतु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परंतु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती पर जो उस पर विश्वास नहीं करता वह दोषी ठहर चुका; इसलिये कि उस ने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।" (यूहन्ना ३:१४-१८)। और यीशु ने कहा था कि "मैं यदि पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खींचूंगा।" (यूहन्ना १२:३२)।

वह अद्भुत यीशु जिसने अपने जीवन और अपनी मृत्यु और अपने पुनरुत्थान से शताब्दियों से लोगों को प्रभावित किया है, वही यीशु आज भी पृथ्वी पर सब लोगों को यह कहकर अपने पास आने का निमन्त्रण दे रहा है, कि, "हे सब थके और बोझ से दबे लोगो, मेरे पास आओ : मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो और तुम अपने मन में विश्वास पाओगे। क्योंकि मेरा जुआ सहज और मेरा बोझ हल्का है।" (मत्ती ११:२८-३०)।

मित्रो, परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह पृथ्वी पर हमारे बोझ को अपने ऊपर उठाने आया था। बाइबल उसके बारे में कहती है, कि, "देखो यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है।" (यूहन्ना १:२९)। उसके बारे में बाइबल गवाही देकर कहती है, कि, "वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; वह दुखी पुरुष था, रोग से उसकी जान पहिचान थी; और लोग उस से मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया, और हम ने उसका मूल्य न जाना। निश्चय उस ने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुखों को उठा लिया; तौभी हम ने उसे परमेश्वर का मारा कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। परंतु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतू कुचला गया; हमारी ही शांति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हों जाएं। हम तो सब के सब भेड़ों की नाई भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सब के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।" (यशायाह ५३:३-६)। मित्रो, कोई बोझ पाप के बोझ से भारी नहीं है। कभी-कभी हमें किसी ऐसी वस्तु को उठाकर चलना पड़ता है जिसमें बदबू या दुर्गंध आती है, हम उसे उठाकर नहीं चलना चाहते। परंतु पाप इतना गंदा और घिनौना है कि बाइबल कहती है, कि, "तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुंह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता।" (यशायाह ५९:२)। पाप मनुष्य को न केवल इस जीवन में परमेश्वर से अलग रखता है, परंतु यदि मनुष्य इस जीवन के रहते अपने पाप से छुटकारा प्राप्त न कर ले तो वह मृत्यु के बाद हमेशा के लिये परमेश्वर से अलग रहेगा। कहा जाता है, कि परमेश्वर हर एक जगह है; परंतु मैं आपको बताना चाहता हूं, मित्रो, कि एक जगह ऐसी भी जहां परमेश्वर नहीं है और वह जगह है नरक। और बाइबल में लिखा है कि "डरपोकों, अविश्वासियों, घृणितों, हत्यारों, व्यभिचारियों, जादूगरों, मूर्त्तीपूजकों और सब झूठों का भाग उस झील में होगा जो आग और गंधक से जलती रहती है: यह दूसरी मृत्यु है।" (प्रकाशितवाक्य २१:८)।

उस अनन्त मृत्यु से बचने का केवल एक ही मार्ग है, अर्थात् परमेश्वर पुत्र मसीह, जिस ने हमारे पापों को अपने ऊपर उठा लिया है और जो हमारे पापों का प्रायश्चित है। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि प्रत्येक मनुष्य को अपने पापों से मुक्ति प्राप्त करने के लिये यीशु में विश्वास लाकर अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्ता लेना चाहिए। (मरकुस १६:१६; प्रेरितों २२:१६)। और फिर बाइबल में यह लिखा है, कि, "जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है, परंतु वह जो पुत्र की नहीं मानता जीवन को नहीं देखेगा, परंतु परमेश्वर का प्रकोप उस पर बना रहता है।" (यूहन्ना ३:३६)।

सूचना !

सत्य - सुसमाचार

सप्ताह में चार बार रेडियो पर सुनिये

प्रत्येकः मंगलवार, बृहस्पतिवार तथा शुक्रवार को रात में नौ बजे और रविवार को दिन में १२:४५ पर।

ये कार्यक्रम रेडियो श्रीलंका (सीलोन) से 19, 25 और 41 मीटर बैंड पर सुने जा सकते हैं।

प्रचारक
सनी डेविड

लगभग मुफ्त! !

रेडियो प्रवचनों की बीस किताबें एक साथ प्राप्त कीजिए। केवल बीस रु0। मनी आर्डर से भेजिए।

पताः
बाइबल टीचर,
सी-22, साऊथ एक्स - 2
नई दिल्ली - 110049